

डॉ. एंथनी जे. टोमासिनो, दस आज्ञाएँ, सत्र 1, दस आज्ञाएँ और कानून

यह डॉ. एंथनी जे. टोमासिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 1 है, दस आज्ञाएँ और कानून।

नमस्ते, मैं टोनी टोमासिनो हूँ, दस आज्ञाओं पर एक किताब का लेखक जो कई साल पहले आई थी जिसका शीर्षक था: "हृदय पर लिखी गई, आज के ईसाई के लिए दस आज्ञाएँ।"

वह किताब वास्तव में उपदेशों की एक श्रृंखला के रूप में शुरू हुई, और फिर उपदेशों की एक श्रृंखला से यह रविवार स्कूल कक्षाओं की एक श्रृंखला में चली गई, और फिर रविवार स्कूल कक्षाओं की एक श्रृंखला से यह व्याख्यानों की एक श्रृंखला में चली गई जिसे मैंने विभिन्न पादरी समूहों को प्रस्तुत किया, और इसी तरह। और वहाँ से, मैंने सोचा, ठीक है, मैं अपने सभी नोट्स को एक साथ इकट्ठा कर सकता हूँ और उन्हें किसी ऐसे रूप में रख सकता हूँ जिसे अन्य लोग भी सराह सकें। तो मैं इस बिंदु पर जो कर रहा हूँ वह है, उस पुस्तक को लिखने के बाद से वर्षों के विचारों पर चिंतन करना, साथ ही कुछ प्रमुख बिंदु जो मैंने बहुत पहले दस आज्ञाओं के उपचार में उठाए थे।

बहुत व्यावहारिक, मेरा मानना है कि दस आज्ञाएँ बहुत व्यावहारिक हैं। मेरा मानना है कि दस आज्ञाओं को उस संदर्भ में समझने की ज़रूरत है जिसमें उन्हें दिया गया था और साथ ही हमारे संदर्भ में भी। हम प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया और हमारे वर्तमान समाज के क्षितिज के विलय के बारे में बात कर सकते हैं, यही वजह है कि ये "आज के ईसाई के लिए दस आज्ञाएँ" हैं।

कि यह सुनने में थोड़ा आधुनिक लगता है, या कुछ और, लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि यह अपने तरीके से एक उपयुक्त शीर्षक है क्योंकि आज हम अलग-अलग सवालियों का सामना कर रहे हैं। हम शायद 50 साल पहले या 500 साल पहले की तुलना में अलग-अलग चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, और निश्चित रूप से 3,000 साल पहले की तुलना में अलग-अलग चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इसलिए दस आज्ञाएँ हमें अभी भी मार्गदर्शन देती हैं कि अगर हम उन्हें समझें, अगर हम उनकी सराहना करें, अगर हम उन्हें अपने जीवन और परिस्थितियों में लागू करें तो हमें कैसे जीना चाहिए।

तो, हम दस आज्ञाओं को इस तरह से देखेंगे कि वे बाइबल के कानून संहिता के भाग के रूप में या यहाँ तक कि हम कह सकते हैं कि उनकी नींव हैं, जो निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, संख्या, व्यवस्थाविवरण आदि में निर्धारित किए गए थे। तो, इस उपचार, इस विषय को शुरू करने के लिए सबसे पहले यह समझना होगा कि यहाँ कानून से हमारा क्या मतलब है और दस आज्ञाएँ उस पूरी कानून परंपरा में कैसे फिट होती हैं। अब, सबसे पहले, मैं दस आज्ञाओं के लिए वर्तमान संदर्भ के बारे में थोड़ा और बता दूँ।

अब, चर्च परंपरा में दस आज़ाएँ, जिन्हें डेकालॉग के रूप में भी जाना जाता है, और मैं समय-समय पर उस शब्द का उपयोग करूँगा, उन्हें ईसाई धर्म के तीन मूलभूत दस्तावेजों में से एक माना जाता है। चर्च परंपरा के अनुसार, ईसाई धर्म के तीन मूलभूत दस्तावेज दस आज़ाएँ हैं, जो एक नैतिक आधार प्रदान करती हैं, प्रभु की प्रार्थना, जो एक आध्यात्मिक आधार प्रदान करती है, और प्रेरितों का पंथ, जो ईसाई धर्म का एक धार्मिक आधार प्रदान करता है। अक्सर, जब मैं एक नए चर्च में शुरू करता हूँ, तो मैं इन तीनों को उपदेशों की एक श्रृंखला में प्रस्तुत करता हूँ, दस आज़ाओं से शुरू करके और फिर आगे बढ़ते हुए, आमतौर पर लेंट के दौरान, मैं प्रभु की प्रार्थना करता हूँ, और फिर गर्मियों में, मैं प्रेरितों का पंथ करता हूँ।

और इसलिए, हम ईसाई धर्म की संपूर्ण नींव को कवर करते हैं, और इसलिए, हर चर्च जिसमें मैंने कभी सेवा की है, मैं ईसाई होने के सभी आवश्यक ज्ञान का कुल, पूर्ण आधार रहा है। क्या मैं नहीं चाहता? लेकिन वैसे भी, यह शुरू करने के लिए एक अच्छी जगह है। कभी-कभी, हम दस आज़ाओं को एक बुनियादी कानून संहिता, प्राचीन इज़राइल की बुनियादी कानून संहिता कहते हुए सुनते हैं।

जब मैंने यह किताब लिखी थी, तब इस बात पर बहुत बहस हुई थी कि दस आज़ाएँ अदालतों में लटकी रहनी चाहिए या नहीं, और हमें उन्हें हर स्कूल में रखना चाहिए या नहीं, और इस तरह की सभी बातें। और कई बार, यह तर्क दिया गया कि दस आज़ाएँ वास्तव में किसी भी न्यायपूर्ण समाज का आधार हैं। खैर, मैं व्यक्तिगत रूप से इससे सहमत नहीं हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि दस आज़ाएँ एक विशिष्ट समाज के लिए बनाई गई हैं, एक ऐसा समाज जो इस्राएल के प्रभु, परमेश्वर की पूजा करता है, किसी एक समाज के लिए नहीं।

और हमारा समाज, हम भगवान की पूजा करते हैं या नहीं, आजकल एक बहस का विषय है, मुझे लगता है। लेकिन दस आज़ाओं को कभी-कभी रामबाण की तरह पेश किया जाता है। आप जानते हैं, हमारे स्कूल में गोलीबारी क्यों होती है? खैर, अगर हमारे सभी क्लासरूम में दस आज़ाएँ होतीं, तो हमारे स्कूल में इस तरह की गोलीबारी नहीं होती।

मैं भी इस बारे में इतना आश्वस्त नहीं हूँ। दस आज़ाएँ जादुई नहीं हैं, लेकिन वे बुद्धिमानी भरी हैं। और यही वह बात है जो मैं इस अध्ययन में, दस आज़ाओं के इस उपचार में, इन आज़ाओं में निहित ज्ञान और बुद्धि को सामने लाने में सक्षम होने की उम्मीद करता हूँ।

दस आज़ाओं के बारे में दिलचस्प बात यह है कि जब इस बात पर बहुत बहस चल रही थी कि दस आज़ाओं को कक्षाओं और अदालतों में लागू किया जा सकता है या नहीं, तब भी एक सर्वेक्षण किया गया था, मुझे लगता है कि यह क्रिस्चियनिटी टुडे द्वारा किया गया था, हो सकता है कि मैं इस बारे में गलत हूँ, लेकिन उन्होंने लोगों से दस आज़ाओं के नाम बताने को कहा। ईसाई, ठीक है, ईसाई, दस आज़ाओं के नाम बताने को कहा। आपको क्या लगता है कि औसत ईसाई कितनी आज़ाओं के नाम बता सकता है? उनमें से ज़्यादातर ने चार बताए। दस आज़ाओं में से चार।

अगर उनसे उन्हें क्रम से रखने को कहा जाए, तो लगभग सभी विफल हो गए। इसलिए भले ही लोगों को लगता है कि ये बहुत, बहुत महत्वपूर्ण हैं और एक न्यायपूर्ण समाज की समझ के लिए

बहुत ज़रूरी हैं, लेकिन ज़्यादातर लोग इस बारे में बहुत कम जानकारी रखते हैं कि वे वास्तव में क्या कहते हैं।

तो आइए हम अगले कई व्याख्यानों में इस पर थोड़ा विस्तार से चर्चा करें। सबसे पहले, कानून की पूरी अवधारणा से शुरुआत करें, क्योंकि हमने इस तथ्य के बारे में बात की है कि दस आज़ाएँ प्राचीन इज़राइल के कानून संहिता की नींव हैं। और यह एक महत्वपूर्ण बात है।

हम कानून के बारे में सोचते हैं, और मुझे याद है कि कई साल पहले मैंने ओल्ड टेस्टामेंट में कानून के बारे में एक किताब पढ़ी थी, और इसकी शुरुआत एक कविता से हुई थी जिसमें मूल रूप से तर्क दिया गया था कि हम वास्तव में नहीं जानते कि कानून क्या है, कि कानून को परिभाषित करना बहुत कठिन है। और मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि यह पोर्नोग्राफी जैसा है। आप जानते हैं, यह उन चीज़ों में से एक है जिसे आप देखते ही पहचान लेते हैं।

मुझे नहीं लगता कि यह इतना बुरा है, वास्तव में। कैम्ब्रिज डिक्शनरी के अनुसार, कानून आमतौर पर सरकार द्वारा बनाया गया एक नियम है जिसका उपयोग समाज के व्यवहार के तरीके को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। यह बहुत सीधा, बहुत सरल लगता है।

और हमारे पास नियम हैं, हमारे पास नियम लागू करने वाली सरकारें हैं, और हमारे पास व्यवहार के नियम हैं। अब, दूसरी ओर, बहुत से लोग सिर्फ नियमों के साथ ही रुक जाते हैं, आप जानते हैं, कानून नियम हैं। और इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि आप नागरिक समाज के बारे में बात कर रहे हैं या किसी खेल के बारे में; आपके पास अभी भी ऐसे कानून हैं जिनका आपको पालन करना है और वे चीज़ें हैं जो आपको करनी हैं।

तो, हम में से ज़्यादातर लोग कानून की अवधारणा से परिचित हैं, और हम कानून के बारे में बहुत ही, मैं कहूँगा, निरपेक्ष शब्दों में सोचते हैं। गति सीमा 55 है, यही कानून है। अगर आप 56 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से चलते हैं, तो आप कानून तोड़ रहे हैं।

अगर कानून कहता है कि अगर आप सड़क के किनारे घूमते हैं, तो आप पर 50 रुपये का जुर्माना लगाया जा सकता है। हाँ। तो यह नियम है।

यही विनियमन है। और अगर कोई ऐसा करना चाहे तो इसे लागू किया जा सकता है। और इसलिए कई लोगों के बीच यह भावना है कि कानून इस तरह से निरपेक्ष है।

और कई ईसाई उसी विचार को लेते हैं और इसे बाइबिल के कानूनों पर वापस डालते हैं। और मैं तर्क देने जा रहा हूँ कि बाइबिल के कानून उससे थोड़े अधिक लचीले हैं। और जिन कारणों से हम एक मिनट में देखेंगे, लेकिन प्राचीन निकट पूर्व में, कानून उस तरीके से थोड़ा अलग था जिस तरह से हम अपने दिन और अपने समाज में कानून के बारे में सोचते हैं।

इस बात पर बहुत अध्ययन किया गया है कि कानून कहां से आया। और हम जानते हैं कि कई अलग-अलग प्राचीन समाज थे, लेखन से पहले भी, कानून थे। इन अलग-अलग समाजों और इन अलग-अलग समूहों के लोगों को एक-दूसरे की हत्या करने से रोकने के लिए, एक-दूसरे से चोरी

करने से रोकने के लिए, उन्हें यह एहसास दिलाने के लिए कि समाज में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका क्या है, कानून और नियम बनाने पड़ते थे।

इसलिए मौखिक कानून संहिताएँ संभवतः तब से अस्तित्व में हैं जब से लोगों ने एक साथ मिलना शुरू किया और समूह बनाना शुरू किया और ऐसी चीजें बनाने की कोशिश की जिन्हें हम समाज कह सकते हैं। कानून संहिताएँ। अब, स्थानीय शक्तियों पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रभुओं द्वारा कानून संहिताएँ लागू की गईं।

और हम देखते हैं कि जैसे ही हमारे राज्य विकसित होते हैं, जैसे ही हमारे साम्राज्य विकसित होते हैं, इनमें से कुछ नगर राज्यों और विशेष रूप से मेसोपोटामिया के शासकों ने अपने साम्राज्य के अंतर्गत मौजूद इन विभिन्न जनजातीय समूहों पर अपना शासन थोपने की कोशिश शुरू कर दी। तो आप कह सकते हैं कि यह बदलाव हुआ है, मान लीजिए, आपके पास एक जनजाति है जिसके पास व्यभिचार से निपटने के बारे में अपने नियम हैं। आपके पास एक जनजाति है जिसके पास नियमों का एक अलग सेट है।

खैर, फिर आपके पास एक राजा है जो इन सभी विभिन्न समूहों पर विजय प्राप्त करता है, और वह कहता है, ठीक है, अब मैं तुम्हें दिखाने जा रहा हूँ, तुम इसे मेरे तरीके से करने जा रहे हो। और वह जरूरी नहीं कि इन पिछले समूहों द्वारा किए जा रहे कार्यों को निरस्त या नकारने की कोशिश कर रहा था, बल्कि इस बिंदु पर राजा जो करने की कोशिश कर रहा है वह बस अपने अधिकार का दावा करना है ताकि यह दिखाया जा सके कि वे अब उच्च अधिकारी के प्रति जवाबदेह हैं। तो आपके पास ये सुजरेन हैं जो इन शक्तियों को स्थापित कर रहे हैं।

और जब हम प्राचीन निकट पूर्वी ग्रंथों, विशेष रूप से प्राचीन मेसोपोटामिया से प्राप्त लिखित दस्तावेजों को देखते हैं, तो अब तक खोजे गए सबसे प्राचीन ग्रंथों में से कुछ कानून संहिताएँ थीं। और बहुत से लोग इस समय तक, 1750 ईसा पूर्व तक हम्मुराबी के कानूनों से परिचित हैं। लेकिन हम्मुराबी वास्तव में दृश्य में काफी बाद में आया।

हमारे पास जो सबसे पुराना कानून कोड है, वह उर-नाम्मू नामक व्यक्ति से आया है, जो एक प्राचीन सुमेरियन था, जो शायद 2500 ईसा पूर्व में रहता था। और ये कानून उल्लेखनीय रूप से उन कुछ कानूनों के समान थे जिन्हें हम बाद के कानून कोडों में देखते हैं। बहुत अधिक ओवरलैप।

और इसलिए हमारे पास इन कानूनों के बहुत सारे संग्रह हैं, बहुत प्राचीन ग्रंथ जो दिखाते हैं कि कैसे ये राजा अपने साम्राज्य के अंतर्गत विभिन्न लोगों पर अपना अधिकार थोप रहे थे। तो यह कुछ ऐसा है जो थोड़ा बहस का विषय रहा है। और इस बारे में कुछ लोगों के साथ मेरी कुछ बहसें हुई हैं। लेकिन अच्छे लोग।

लेकिन सवाल यह है कि कानून कहां से आते हैं। और मेरे कुछ दोस्तों ने कहा है, ठीक है, बाइबिल के कानून अलग हैं क्योंकि बाइबिल के कानून भगवान से आते हैं, जबकि प्राचीन निकट पूर्वी लोगों के कानून राजाओं से आते थे।

और राजाओं ने इन कानूनों को प्रस्तुत करने का दावा किया। राजाओं ने कानून प्रस्तुत करने का दावा किया, लेकिन उन्होंने दावा किया कि उन्हें ये कानून देवताओं से मिले हैं। यही उनके अधिकार का स्रोत था।

और हम इसे, उदाहरण के लिए, हम्मुराबी के कानून संहिता में देखते हैं। हम उसे खड़े होकर, भगवान शमाश से कानून की पट्टिका प्राप्त करते हुए देखते हैं। शमाश प्राचीन बेबीलोन में न्याय का देवता था।

कानून एक शर्त थी, एक तरह से वाचा की शर्त। तो आपको यह राजा मिल गया। उसने इन विभिन्न लोगों पर विजय प्राप्त की है।

और अब वह कह रहा है, आप लोगों को इन नए नियमों से सहमत होना होगा। शहर में एक नया शेरिफ है। आपको मुझे जवाब देना होगा।

और राजा और उसकी प्रजा के बीच एक अनुबंध संबंध है। इसलिए लोग, एक तरह से, हम्मुराबी के साम्राज्य का हिस्सा होने के अधिकार, चाहे वे जो भी हों, अपने ऊपर ले रहे हैं। लेकिन साथ ही, वे हम्मुराबी के कानूनों का पालन करने की ज़िम्मेदारी भी अपने ऊपर ले रहे हैं।

लेकिन यहाँ एक दिलचस्प बात है, और यह प्राचीन पूर्वी कानून की पूरी परंपरा में है। कानून एक अनुबंध संबंध में मौजूद है। राजा का इन लोगों के साथ एक अनुबंध संबंध है, जो उसे उन पर कानून लागू करने का अधिकार देता है।

और यही बात, बेशक, हम अश्शूरियों में देखते हैं, यही बात हितियों में भी है। हर कोई इस बात पर सहमत था कि यह राजा का नियम है और यह तथ्य कि उसने लोगों के लिए कुछ किया है, जो उसे उन पर ये वाचा संबंधी दायित्व थोपने का अधिकार देता है, जो कानून का रूप ले लेते हैं। अब, प्राचीन निकट पूर्व में, कानून के दो मुख्य प्रकार हैं जिनमें व्यक्त किया जाता है।

और इन्हें सबसे पहले अल्लेक्ट ऑल्ट नाम के एक व्यक्ति ने पहचाना था। उन्होंने ये शब्द गढ़े थे। मुझे लगता है कि हर कोई लंबे समय से जानता है कि कानून के रूप अलग-अलग होते हैं, लेकिन अल्लेक्ट ऑल्ट ने दो तरह के कानूनों का वर्णन करने के लिए इन शब्दों को गढ़ा, अपोडिक्टिक और कैसुइस्टिक।

अपोडिक्टिक शब्द उन शब्दों से आता है जिनका मूल रूप से अर्थ होता है शब्द से, हुक्म से, किसी तरह की चीज़ से। तो घोषणा से, तुम्हें करना चाहिए, तुम्हें नहीं करना चाहिए। यह एक अपोडिक्टिक कानून है।

वाले अधिकांश कानून वही हैं जिन्हें हम कैसुइस्टिक कानून कहते हैं। और यही केस लॉ है। अगर किसी व्यक्ति के पास एक बैल है जिसके बारे में उसे पता है कि वह लोगों को मार सकता है, और उस व्यक्ति ने अपने बैल को मारने के लिए कुछ नहीं किया है, और वह बैल किसी को मार देता है, तो उस व्यक्ति को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए।

इस तरह की बात। अगर ऐसा होता है, तो आप ऐसा करते हैं। इसे हम कैसुडिस्टिक कानून कहते हैं।

और वह बहुत दूर है प्राचीन निकट पूर्व में पाए जाने वाले अधिकांश कानून यहाँ अंकित हैं। यह हम्मुराबी की स्टेला की एक प्रति है। उनकी सभी विधि संहिताएँ यहाँ अंकित हैं।

ये संभवतः उसके राज्य की सीमाओं के चारों ओर स्थापित किए गए थे। लेकिन यहाँ हम भगवान शमाश को देखते हैं। आप जानते हैं कि वह एक देवता है क्योंकि उसके सिर पर ये सींग हैं।

मेसोपोटामिया के लोग अपने देवताओं को इसी तरह चित्रित करते थे, क्योंकि उनके पास हमेशा किसी न किसी तरह के सींग होते थे। इसलिए उसके सिर के ऊपर सींगों का यह पूरा सेट है। और वह काफी बड़ा है।

वह एक आदमी की तरह दिखता है। और वह राजा हम्मुराबी को कानून सौंप रहा है। तो, हम्मुराबी यहाँ बहुत ही स्पष्ट शब्दों में दावा कर रहा है कि न्याय के देवता शमाश ही कानून का स्रोत हैं।

और ये कानून बहुत ही आम तौर पर अपोडिक्टिक के बजाय कैसुडिस्टिक हैं। और यहाँ हम उदाहरण के लिए देख सकते हैं, यह हम्मुराबी के कानून से है। अगर कोई किसी व्यक्ति के खिलाफ आरोप लगाता है, और आरोपी नदी पर जाता है और नदी में छलांग लगाता है, और अगर वह नदी में डूब जाता है, तो उसका आरोप लगाने वाला उसके घर पर कब्ज़ा कर लेगा।

लेकिन अगर नदी साबित करती है कि आरोपी दोषी नहीं है और वह सुरक्षित बच जाता है, तो आरोप लगाने वाले को मौत की सज़ा दी जाएगी, जबकि नदी में कूदने वाले को उस घर पर कब्ज़ा करना होगा जो उसके आरोप लगाने वाले का था। कभी-कभी यह लोगों को चुड़ैलों के मुकदमों की याद दिलाता है, जहाँ, आप जानते हैं, अगर आप किसी चुड़ैल को नदी में फेंकते हैं, अगर वह वास्तव में चुड़ैल है, तो वह तैर जाएगी क्योंकि वह लकड़ी से बनी है। और अगर वह डूब जाती है, तो आप उसे मौत की सज़ा देते हैं, क्योंकि, अगर वह डूब जाती है, तो इसका मतलब है कि वह निर्दोष थी, है न? तो, आप जानते हैं, अगर आप ऐसा करते हैं तो भी धिक्कार है और अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो भी धिक्कार है।

लेकिन यहाँ वास्तव में ऐसा नहीं हो रहा है क्योंकि आप आरोपी को ले लीजिए, वह नदी में कूद जाता है, अगर वह तैरता है, तो ठीक है, इसका मतलब है कि वह निर्दोष है। लेकिन अगर नदी उसे नीचे खींच लेती है और उसे डुबो देती है, तो इसका मतलब है कि वह दोषी था। तो यहाँ यही विचार है।

हम्मुराबी की संहिता के बारे में दिलचस्प बात यह है कि हमने कई प्राचीन विधि संहिताओं में भी यही पाया है कि जैसे-जैसे हम अधिक से अधिक ग्रंथों को समझ रहे हैं, एक बात यह सामने आई है कि हमारे पास अदालती कार्यवाही के बहुत सारे रिकॉर्ड हैं। इसलिए हम कई मामलों में देख सकते हैं कि जब ये अलग-अलग मामले उनके सामने आए तो न्यायाधीशों ने क्या निर्णय दिए। और उल्लेखनीय रूप से, हम्मुराबी की संहिता को लागू नहीं किया गया।

भले ही उनके पास यह अद्भुत, अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया कानून कोड था, जिसे लोग आज भी पढ़ते हैं और कहते हैं, आप जानते हैं, यह यहाँ उल्लेखनीय चीज़ है, न्यायाधीशों ने अपने मामलों का फैसला करते समय हम्मुराबी के कोड का उपयोग नहीं किया। मैं कहता हूँ, आप जानते हैं, ज़्यादातर प्रतीकात्मक, शायद, हम कह सकते हैं। हम्मुराबी के सुझाव, आप जानते हैं, शायद।

लेकिन उल्लेखनीय बात यह है कि अब बुनियादी सिद्धांत स्पष्ट रूप से समझ में आ गए हैं। हमने पाया कि दंड में बहुत भिन्नता थी। इसलिए, हर कोई सहमत था, आप जानते हैं, अगर कोई व्यक्ति व्यभिचार करता है, तो यह गलत है, और व्यभिचारी और व्यभिचारिणी को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए।

लेकिन उस व्यवस्था में बहुत सारी छूट दी गई थी। और हम इसे विशेष रूप से दिलचस्प पाते हैं जब आप मध्य असीरियन कानून संहिताओं को देखते हैं, क्योंकि वे इस बारे में बहुत स्पष्ट हैं। वे कहते हैं, अगर कोई पुरुष किसी विवाहित महिला के साथ व्यभिचार कर रहा है और उसने उसे बहकाया है और उसके साथ व्यभिचार किया है, तो उन दोनों को मौत की सज़ा दी जानी चाहिए, लेकिन अगर पति अपनी पत्नी को जीवित रहने देना चाहता है, तो उसे जीवित रहने दें।

और उस स्थिति में, पुरुष को भी नहीं मारा जाएगा। अगर पुरुष अपनी पत्नी की नाक काटने के लिए इच्छुक है, जो कि व्यभिचार से निपटने के उनके तरीकों में से एक है, तो वे पुरुष की नाक भी काट देंगे। असीरियन किसी कारण से शरीर के अंगों को काटने में बहुत बड़े थे।

थोड़ा डरावना। लेकिन वैसे भी, यहाँ मुद्दा यह है कि ये कानून दिशा-निर्देशों की तरह थे, न कि जिस तरह से हम आज के कानूनों के बारे में सोचते हैं। तो यह कुछ इस तरह है, हमारे पास 55 मील प्रति घंटे की गति सीमा है, और यदि आप 56 मील प्रति घंटे की गति से चलते हैं, तो आपको \$100 का जुर्माना देना पड़ सकता है।

और शायद तब से यह बढ़ गया है। जब मैं शिकागो में था, तो उन्होंने मेरे साथ भी यही किया था। लेकिन वैसे भी, आपके पास 55 मील प्रति घंटे की गति सीमा है।

यह पुलिस के विवेक पर निर्भर करता है, है न? वे आपको 56 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से गाड़ी चलाने के लिए टिकट देंगे या नहीं। अब, वे तकनीकी रूप से आपको 56 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से गाड़ी चलाने के लिए टिकट दे सकते हैं। तकनीकी रूप से, वे आपसे \$100 चार्ज कर सकते हैं, लेकिन उनमें से ज़्यादातर आपको कुछ छूट देने वाले हैं।

वे सोचेंगे, ठीक है, आप जानते हैं, हर कोई 56 पर जा रहा है, मैं आपको क्यों चुनूँ? तो हाँ, इन कानून संहिताओं में एक निश्चित मात्रा में जिसे हम अनुग्रह या उदारता या सरल विवेक कह सकते हैं, अंतर्निहित था। अब, यह इस्राएलियों के कानून से कैसे तुलना करता है, वह कानून जो हमें हिब्रू बाइबिल में मिलता है? और फिर, एक बात जिस पर लोग बहुत अटक जाते हैं, वह है, ओह, पुराने नियम के कानून बहुत कठोर हैं, ओह, ये लोग, वे हर किसी को हर चीज़ के लिए मार रहे थे,

है ना? खैर, आइए इसके बारे में सोचें। सबसे पहले, आइए थोड़ा बात करते हैं कि कानून, टोरा से हमारा क्या मतलब है।

इसका अनुवाद आमतौर पर कानून के रूप में किया जाता है, लेकिन वास्तव में, टोरा शब्द का अर्थ शिक्षण या निर्देश है। और हम इसे, उदाहरण के लिए, नीतिवचन की पुस्तक में पाते हैं। यह वह शब्द है जिसका उपयोग नीतिवचन की पुस्तक में शिक्षण के लिए किया गया है।

इसका अर्थ नियम के समान नहीं है। हो सकता है, लेकिन जरूरी नहीं कि इसका अर्थ वही हो। यह एक तरह से ज्ञान परंपरा से ही निकलता है।

शिक्षा या निर्देश। तो, यह शब्द पहली बार उत्पत्ति 26 की पुस्तक में दिखाई देता है। अब्राहम ने मेरी बात मानी और मेरे आदेश, मेरी आज्ञाएँ, मेरी विधियाँ और मेरे कानून का पालन किया।

तो यह शब्द सबसे पहले यहीं आता है। अब सवाल यह है कि क्या अब्राहम के पास मूसा के नियम थे? नहीं, बिल्कुल नहीं। वह मूसा से कम से कम 500 साल पहले जीया था।

उसके पास मूसा के नियम नहीं हैं। तो हम यहाँ किन नियमों की बात कर रहे हैं? हम अब्राहम को दिए गए परमेश्वर के सामान्य निर्देशों की बात कर रहे हैं, जैसे अपनी बहन से शादी न करने के नियम।

ओह, एक मिनट रुको। वैसे भी, हम पाते हैं कि अब्राहम परमेश्वर द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार सद्भावनापूर्वक कार्य कर रहा था। और वास्तव में यहाँ इसका यही मतलब है।

इस अनुच्छेद में इस शब्द का यही अभिप्राय है। हम निश्चित रूप से टोरा शब्द का प्रयोग पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकों के लिए एक तकनीकी शब्द के रूप में करते हैं। इसे आम तौर पर टोरा कहा जाता है।

और हम इसे न केवल कानूनी सामग्री पर लागू करते हैं, बल्कि माता-पिता की शिक्षा पर भी लागू करते हैं, जो कि नीतिवचन की पुस्तक में है, भविष्यवाणी संबंधी निर्देश को टोरा भी कहा जाता है। इसलिए, यह एक बहुत व्यापक शब्द है, जिसे हम आमतौर पर कानून के बारे में सोचते समय सोचते हैं। और मैं कहूँगा कि यह एक बहुत व्यापक अवधारणा भी है, जैसा कि हम आगे चलकर देखेंगे।

इस संदर्भ में कुछ अन्य शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। हुक्का शब्द का अर्थ कानून होता है। और कानून थोड़ा अलग होता है।

ऐसा लगता है कि यह एक ऐसे शब्द से आया है जिसका अर्थ है उत्कीर्ण करना। और इस मामले में, यह एक अपरिवर्तनीय सिद्धांत के बारे में बात कर रहा है। और आप इसके बारे में इस तरह से सोच सकते हैं कि यह एक अपरिवर्तनीय सिद्धांत है कि लोग व्यभिचार नहीं करते हैं, लेकिन व्यभिचार करने वाले किसी व्यक्ति के मामले से निपटने में समझदारी शामिल है।

और इसमें बहुत अधिक भिन्नता की अनुमति थी। अपरिवर्तनीय सिद्धांत स्पष्ट है। उस अपरिवर्तनीय सिद्धांत के बारे में कानून, टोरा, थोड़ा अधिक अस्पष्ट है।

तो यहाँ एक और शब्द है, मित्ज़वोट, जो कि वह आदेश है जो उसने दिया, यह शब्द तज़ावाह से आया है, जिसका सीधा सा मतलब है आदेश देना। और मित्ज़वोट, यह एक दिलचस्प शब्द है क्योंकि यहूदी धर्म में, और आज भी, इसका अर्थ आदेशों से ज़्यादा अच्छे कामों जैसा है। इसलिए अगर कोई गरीबों को पैसे देता है, तो वह मित्ज़वाह है, एक अच्छा काम।

इसलिए मित्ज़वोट एक दिलचस्प शब्द है क्योंकि हिब्रू बाइबिल में, बहुत स्पष्ट रूप से, इसका अर्थ एक घोषित आदेश है। और फिर भी इसने सामान्य अच्छे कार्यों के इस व्यापक अर्थ को ग्रहण कर लिया है। वैसे, इसका अर्थ आज्ञाएँ भी हो सकता है।

यहूदी धर्म में भी इसका यही मतलब है। इसलिए, नए नियम में, हमारे पास यह ग्रीक शब्द नोमोस है, जो वही शब्द है जिसका इस्तेमाल प्राचीन यूनानियों ने अपने कानूनों के बारे में किया था। यह एक ऐसा शब्द है जिससे हमें खगोल विज्ञान, सितारों का नियम और इस तरह की चीज़ें मिलती हैं।

लेकिन इसमें या तो परंपरा या कानून का भाव हो सकता है। और यह फिर से उससे थोड़ा अलग है जो हम आमतौर पर इसके बारे में सोचते हैं। क्योंकि जब हम तारों के नियमों के बारे में सोचते हैं, तो हम भौतिकी के बारे में सोच रहे होते हैं, और हम उन चीज़ों के बारे में सोच रहे होते हैं जो पत्थर की लकीर होती हैं।

स्थापित होने से कहीं ज़्यादा, वे ईथर और बिग बैंग और उस तरह की सभी चीज़ों में स्थापित हैं। और वे अपरिवर्तनीय और शाश्वत हैं, और यही कारण है कि दुनिया हमेशा उसी तरह काम करती रहेगी, जिस तरह से वह चल रही है, भौतिकी के नियमों या खगोल विज्ञान के नियमों या विज्ञान के विभिन्न प्रकार के सिद्धांतों के नियमों के कारण।

लेकिन इसमें परंपरा और उन चीज़ों का भी भाव है जो सामान्य रूप से की जाती हैं। तो चलिए यहाँ इस्राएली कानून की उत्पत्ति और विकास के बारे में थोड़ी बात करते हैं। हमने बात की कि कैसे प्राचीन निकट पूर्व में, ये अलग-अलग समूह थे जिन्हें एक राजा के अधीन लाया गया था।

जैसे उर-नामू या हम्मुराबी। और जब उन्होंने इन अलग-अलग लोगों को इकट्ठा किया, तो इन अलग-अलग लोगों के पास अपने स्वयं के मौजूदा कानून थे। लेकिन अब उनके ऊपर उनके संप्रभु द्वारा एक नया कोड लगाया जा रहा था, जिसके साथ वे एक अनुबंध संबंध में प्रवेश कर रहे थे।

यह इसराइल में जो हम देखते हैं, उससे किस तरह मिलता-जुलता है? मैं तर्क दूंगा कि यह इसराइल में जो हम देखते हैं, उससे बहुत मिलता-जुलता है। तो हमारे पास इसराइल की अलग-अलग जनजातियाँ हैं, इसराइल की 12 जनजातियाँ। इस बारे में बहुत सारे सवाल हैं कि वे पहले एक-दूसरे से कैसे संबंधित थे, और इस तरह के सभी मुद्दे उठते हैं।

आलोचनात्मक विद्वानों का मानना है कि इज़राइल की जनजातियाँ मूल रूप से पूरी तरह से अलग समूह थीं और उनका एक दूसरे से कोई वास्तविक आनुवंशिक संबंध नहीं था। मुझे नहीं लगता कि हममें से ज्यादातर लोग ऐसा मानते होंगे। लेकिन मुद्दा यह है कि आपके पास ये अलग-अलग जनजातियाँ थीं जो किसी न किसी तरह से अपनी जनजातियों के साथ बहुत मज़बूत पहचान रखती थीं।

वास्तव में, पूरे राष्ट्र के साथ उनके जो नियम थे, उससे कहीं ज़्यादा। और इनमें से प्रत्येक जनजाति के अपने नियम, अपने नियम होते। बेंजामिन के गोत्र का सदस्य होने का क्या मतलब है? यहूदा के गोत्र का सदस्य होने का क्या मतलब है? खैर, उनके अपने नियम थे।

उनके पास अपने स्वयं के नियम थे जो उनके अपने समाज को विनियमित करते थे। इसलिए ऐसा नहीं था कि मूसा के आने से पहले यहूदा के लोगों को कानून की कोई समझ नहीं थी। स्पष्ट रूप से, उनके पास कानून रहे होंगे।

उनके पास इस बारे में विचार और प्रक्रियाएँ रही होंगी कि वे कानून तोड़ने वालों से कैसे निपटेंगे और इसी तरह की अन्य बातें। यह सब मूसा के समय से पहले ही अस्तित्व में था। और फिर हमारे पास मूसा आता है, और उसे सिनाई पर्वत पर परमेश्वर से ये सभी कानून मिलते हैं।

परमेश्वर, एक अर्थ में, उन लोगों के उन जनजातीय नियमों पर अपना अधिकार जता रहा है, जिनके पास पहले से ही नियम हैं। अब, इसमें कोई संदेह नहीं है कि यहूदा के लोगों के पास हत्यारों से निपटने के तरीके थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि लेवी के गोत्र के लोगों के पास व्यभिचारियों से निपटने के अपने तरीके थे।

परमेश्वर कह रहा है कि तुम मेरे साथ वाचा के रिश्ते में प्रवेश कर रहे हो। मैं यही चाहता हूँ कि यह इसी तरह हो। अब, क्या परमेश्वर ने मूसा को सिनाई पर्वत पर सब कुछ दे दिया? खैर, यह एक दिलचस्प बात है क्योंकि, यहूदी परंपरा के अनुसार, परमेश्वर ने मूसा को सिनाई पर्वत पर सचमुच सब कुछ दे दिया था।

इसमें न केवल टोरा में पाए जाने वाले कानून शामिल हैं, बल्कि सभी भविष्यद्वक्ता और सभी लेखन और सभी रब्बी शिक्षाएँ भी शामिल हैं। और भगवान ने मूसा से कहा, अब यह सब बातें यहाँ चुप रहो क्योंकि अगर गैर-यहूदियों को यह सब मिल गया, तो वे इसे बर्बाद कर देंगे। लेकिन हाँ, ये रब्बी शिक्षाएँ हैं जो ज़रूरी नहीं कि ऐसी कोई चीज़ हों जिस पर हम बहुत ज़्यादा ऐतिहासिक भरोसा करने जा रहे हैं।

मुझे नहीं लगता कि इसके अपने उद्देश्य हैं, लेकिन इतिहास नहीं है। हम यह कह सकते हैं कि ईश्वर ने मूसा को सिनाई पर कानून दिए, लेकिन हम यह भी कह सकते हैं कि न्यायालयों में इन कानूनी परंपराओं का विकास हुआ। और हम इसे पहले से ही टोरा की पुस्तकों में देखते हैं।

हमारे साथ कुछ ऐसा हुआ कि कानून देने के तुरंत बाद, हमारे पास एक मिस्री व्यक्ति था जो इस्राएलियों के शिविर में परमेश्वर के नाम को कोसता था। और इसलिए लोग परमेश्वर के सामने

गए और उन्होंने पूछा, अच्छा, हमें इसके बारे में क्या करना चाहिए? और परमेश्वर ने कहा, उसे बाहर निकालो और उसे पत्थर मार डालो। और इसलिए उन्होंने इसे कानून में लिख दिया।

अगर कोई ईश्वर के नाम की निंदा करता है, तो हम उसे पत्थर मार कर मार देते हैं। तो हम देख सकते हैं कि पहले से ही टोरा में, विस्तार के लिए, निर्माण के लिए, कानून के विस्तार के लिए जो लिखा गया है या जो पहाड़ पर मूसा को दिया गया था, उससे परे प्रावधान है। अब बाइबल यह सब मूसा के कानूनों और मूसा के समय में आने के रूप में प्रस्तुत करती है।

मुझे लगता है कि यह इतिहास से ज़्यादा इतिहासलेखन का मामला है, जिस तरह से उन दिनों इतिहास लिखा जाता था। लेकिन किसी भी तरह से, यह स्पष्ट है कि टोरा में हमें जो कानून मिलते हैं, वैसे, मैं यह नहीं कह सकता कि यह स्पष्ट है, लेकिन यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि टोरा में हमें जो कानून मिलते हैं, उनमें से कई वास्तव में बाद के समय से आते हैं। और उन्हें टोरा में एक साथ लाया गया है क्योंकि वे एक ही तरह की परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मूसा की पाँच पुस्तकें, पेंटाटेच, कब एक साथ उस रूप में आईं, जिस रूप में वे हमारे पास हैं, इस बारे में बड़ा सवाल है। लंबे समय से प्रचलित सिद्धांत यह है कि एज्रा के तहत कानून वास्तव में संहिताबद्ध किए गए थे। और मुझे लगता है कि इसके कई अच्छे कारण हैं।

इस सिद्धांत के लंबे समय तक बने रहने का एक कारण है। एज्रा की पुस्तक के अनुसार, एज्रा ने विभिन्न कानून संहिताओं को इकट्ठा किया, और वह यरूशलेम आया, और वह लोगों के सामने खड़ा हुआ और उसने कानून पढ़े। और जब उसने कानून पढ़े, तो लोग रो रहे थे, और वे अपने कपड़े और सब कुछ फाड़ रहे थे क्योंकि वे ये सब नहीं कर रहे थे।

इसमें, उदाहरण के लिए, झोपड़ियों का पर्व जैसी चीजें शामिल हैं। इसमें कहा गया है कि उन्होंने यहोशू के दिनों से झोपड़ियों का पर्व नहीं मनाया था। तो, वे ऐसा क्यों नहीं कर रहे थे? क्या उन्हें वास्तव में पता भी था कि उन्हें ऐसा करना चाहिए था? खैर, एज्रा के अनुसार, ऐसा नहीं लगता कि उन्हें पता था कि उन्हें ऐसा करना चाहिए था।

तो, सवाल यह है कि रब्बी परंपरा कहती है कि अगर मूसा ने कानून नहीं लिखा होता, तो एज्रा ने लिखा होता। और एक भावना यह भी है कि शायद एज्रा यहाँ भूत लेखक था या कुछ और। लेकिन एज्रा ने स्पष्ट रूप से मूसा से जुड़ी इन परंपराओं में से कई को, इस्राएल की कानूनी परंपराओं के साथ एक साथ लाया।

और उसने उन्हें लागू किया। इन नियमों को लागू करने और उन्हें वास्तव में देश का कानून बनाने के लिए उसके पीछे फारसी साम्राज्य का अधिकार था। ऐसा नहीं है कि एज्रा के समय से पहले कानून मौजूद नहीं थे या परंपराएँ मौजूद नहीं थीं, क्योंकि हम जानते हैं कि वे मौजूद थीं।

बस इतना ही है कि उन्होंने ज़्यादातर समय उन्हें अनदेखा किया। यह यिर्मयाह की इस्राएल के लोगों के खिलाफ़ बड़ी शिकायत है। यिर्मयाह के अपने एक अध्याय में, हम बाद में इस पर चर्चा करेंगे, वह कहता है, तुम लोग जानते हो, तुम सब्त के दिन को अनदेखा कर रहे हो।

आप यह सारा व्यापार सब्त के दिन कर रहे हैं। उन्हें यह समझ थी कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, लेकिन फिर भी वे ऐसा कर रहे हैं। एज्रा में स्पष्ट रूप से इन चीजों को एक साथ लाने की क्षमता थी।

उन्हें एक लेखक कहा जाता है, एक कानूनी विद्वान जो इन परंपराओं को इस तरह के लिखित रूप में ला सकता है जो कॉम्पैक्ट और जेब के आकार का हो। जो भी हो। खैर, स्कॉल के आकार का, लेकिन इतना बड़ा।

लेकिन वह इन चीजों को एक साथ ला सकता था, और वह उन्हें लोगों पर थोप सकता था और उन्हें अनिवार्य रूप से देश का कानून बना सकता था। और यह कुछ नया लगता है। अब, थोड़ा आगे।

यहाँ पुराने नियम के कानून हैं। आम तौर पर, पुराने नियम के कानूनों का स्वरूप आकस्मिक है, ठीक वैसे ही जैसे हम्मुराबी के कोड में है, ठीक वैसे ही जैसे उर-नाम्मू के कोड में है, ठीक वैसे ही जैसे मध्य असीरियन कानूनों में है। तो आपके पास इस तरह की चीजें हैं।

अगर आप कोई हिब्रू नौकर खरीदते हैं, तो उसे छह साल तक आपकी सेवा करनी होगी। लेकिन सातवें साल में उसे कुछ भी भुगतान किए बिना मुक्त कर दिया जाएगा। इसलिए, अगर आप खरीदते हैं, तो सातवें साल में वह मुक्त हो जाता है।

अगर वह अकेला आता है, तो वह अकेला ही जाता है। लेकिन अगर उसने पत्नी पा ली है, तो वह उसके साथ जाती है। यह कैसुडिस्टिक कानून है।

कभी-कभी टोरा में अपोडिक्टिक कानून होते हैं। और यहाँ हम कुछ ऐसा देखते हैं, उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था 18:21 में। अपने बच्चों में से किसी को भी मोलेक के पास मत भेजो, चाहे इसका मतलब कुछ भी हो। इस बारे में बहुत बहस हुई है।

ऐसा लगता है कि वे बच्चे की बलि के बारे में बात कर रहे हैं। मुझे लगता है कि वे बच्चे की बलि के बारे में बात कर रहे हैं। लेकिन कुछ लोगों ने सोचा है कि शायद यह सिर्फ एक समर्पण है, है न? मुझे नहीं पता।

मुझे लगता है कि वे बच्चे की बलि के बारे में बात कर रहे हैं। तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का अपमान नहीं करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ।

लैव्यव्यवस्था 18:21. यह अपोडिक्टिक है। तो, दस आज्ञाएँ इसमें कहाँ फिट होती हैं? खैर, जाहिर है, दस आज्ञाएँ अपोडिक्टिक हैं। तुम हत्या नहीं करोगे।

तुम व्यभिचार नहीं करोगे। यह सबसे अधिक अपोडिक्टिव है। लेकिन दस आज्ञाओं के बारे में एक और दिलचस्प बात और कुछ ऐसा जो इसे हम्मुराबी के कानूनों या यहां तक कि लेवितस और नंबर्स आदि के कुछ कानूनों से अलग करता है, वह यह है कि इनमें से किसी में भी कोई दंड शामिल नहीं है।

ओह! हम वहाँ चले गए। तो हमारे पास कुछ ऐसा है, तुम्हें हत्या नहीं करनी चाहिए।

ठीक है, तो अगर कोई हत्या करता है तो उसके साथ क्या किया जाता है? दस आज्ञाओं में ऐसा नहीं कहा गया है। तुम व्यभिचार नहीं करोगे। ऐसा नहीं कहा गया है।

आप कानून तोड़ने वालों के साथ क्या करते हैं? आप उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं? दस आज्ञाओं में ऐसा नहीं कहा गया है। और फिर एक समस्या यह भी है कि जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो दस आज्ञाएँ अस्पष्ट लगती हैं। और यहीं पर हम कई तरह की व्याख्याओं में उलझ जाते हैं।

बाइबल को अच्छी तरह से न जानने वाले लोगों से आप हमेशा यही सुनेंगे कि वे कुछ ऐसा कहेंगे, ठीक है, आप युद्ध नहीं कर सकते क्योंकि बाइबल कहती है कि आपको हत्या नहीं करनी चाहिए। अब, उस अंग्रेजी अनुवाद में कुछ अस्पष्टता है, लेकिन मैं यहाँ वास्तव में उस बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। उसमें हिब्रू में कोई अस्पष्टता नहीं है।

लेकिन ऐसी आज्ञाएँ हैं जो काफी अस्पष्ट लगती हैं, जैसे, उदाहरण के लिए, अपने पिता और माता का सम्मान करो। इसका क्या मतलब है? अपने पिता और माता का सम्मान करो। प्राचीन निकट पूर्वी समय में शायद उन्हें इस बारे में कुछ जानकारी थी कि इसमें क्या शामिल था, और जब हम उस पर पहुँचेंगे तो हम इस बारे में बात करेंगे।

लेकिन इसमें निश्चित रूप से कुछ अस्पष्टता है। या फिर कुछ ऐसा लें जैसे सब्त के दिन को याद रखें और उसे पवित्र रखें। छह दिनों में अपना सारा काम निपटा लें।

अब, यह थोड़ा विस्तार करता है, लेकिन इस हद तक नहीं कि हम पहचान सकें कि काम क्या है। और यह, ज़ाहिर है, कुछ ऐसा है जिसके बारे में फरीसी पूरी तरह से जुनूनी थे, कि आप काम को कैसे परिभाषित करते हैं। और इसलिए आप इस तरह के नियमों के साथ समाप्त होते हैं जैसे कि अगर कोई सब्त के दिन उनके कानून को तोड़ता है, तो आपको इसे भिगोने की अनुमति है, लेकिन आपको इसे रगड़ने की अनुमति नहीं है। या अगर किसी का तकिया गांठदार है, तो आपको सब्त के दिन अपने सिर से इसे फुलाने की अनुमति है, लेकिन आपको सब्त के दिन अपने हाथों से इसे फुलाने की अनुमति नहीं है, क्योंकि यह काम माना जाएगा।

हाँ, इसमें कुछ अस्पष्टता है। आप काम को कैसे परिभाषित करते हैं? और रब्बियों ने उस सभी अस्पष्टता को दूर करने की कोशिश की, लेकिन वे बहुत सफल नहीं हुए। लेकिन दस आज्ञाओं के बारे में सोचने वाली एक और बात यह है कि वे अप्रवर्तनीय हैं।

और यहाँ मैं मुख्य रूप से उस अंतिम आज्ञा के बारे में सोच रहा हूँ, जो प्राचीन दुनिया में पूरी तरह से अनोखी है। हम अपने अंतिम व्याख्यान में इसके बारे में बात करने जा रहे हैं। लेकिन कौन कभी ऐसा कानून पारित करेगा कि आप किसी और के पास जो है उसे नहीं चाहेंगे? आप इसे कैसे लागू करते हैं? क्या आपके पास लोगों के दिमाग को पढ़ने की कोशिश करने के लिए विचार पुलिस है, या आपको लोगों पर नज़र रखनी है कि वे किसी और की पत्नी या किसी और चीज़ को

वासना से तो नहीं देख रहे हैं? अगर आप इसे एक नियम के रूप में देख रहे हैं तो वास्तव में आप उस कानून को लागू नहीं कर सकते।

अगर आप इसे एक नियम के रूप में देख रहे हैं। और यहीं पर बड़ी बात है। क्या यह वास्तव में एक नियम है जिस तरह से हम आमतौर पर किसी नियम के बारे में सोचते हैं? नहीं, यह नहीं है।

यह एक वाचा शर्त है। इस्राएल अपने परमेश्वर के साथ वाचा सम्बन्ध में प्रवेश कर रहा है। और दस आज्ञाएँ वे दायित्व हैं जिन्हें इस्राएल के लोगों को अपने परमेश्वर के साथ उस वाचा सम्बन्ध के भाग के रूप में स्वीकार करने के लिए बुलाया गया है।

जिस तरह राजा हम्मुराबी के अधीन विभिन्न समूहों को हम्मुराबी के नियमों, हम्मुराबी के कानूनों को स्वीकार करना पड़ा, क्योंकि हम्मुराबी के राज्य का हिस्सा होने से उन्हें लाभ मिल रहा था, उसी तरह इज़राइल के लोग भी अपने ईश्वर के साथ एक वाचा संबंध में प्रवेश कर रहे हैं, और उन्हें उस वाचा की ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करना होगा। और मैं मानता हूँ कि दस आज्ञाएँ उस कानून संहिता की नींव हैं। वे वास्तव में कानून नहीं हैं।

वे दायित्व हैं, वे शर्तें हैं जो वे खुद पर ला रहे हैं। मैं दस आज्ञाओं को नियमों के बजाय प्रतिज्ञाओं के रूप में अधिक सोचना पसंद करता हूँ। और यहाँ मुझे लगता है कि आपको चुप रहने का अधिकार है।

आप जो कुछ भी कहते हैं, उसका इस्तेमाल आपके खिलाफ़ किया जा सकता है। विवाह का रूपक, इस्राएल और उसके लोगों के बीच के रिश्ते के लिए एक आम बाइबिल प्रतीक है। और यह विशेष रूप से भविष्यवक्ताओं में, निश्चित रूप से भविष्यवक्ता होशे में, सामने लाया गया है।

हमारे पास यहजेकेल में उस विषय की सबसे सुंदर और दयनीय खोज है, बस दिल दहला देने वाली, यह विचार कि ईश्वर और उसके लोग एक विवाहित रिश्ते में हैं। और ईश्वर अपने लोगों से प्यार करता है, और वह उनके प्रति प्रतिबद्ध है, और वे उससे मुंह मोड़ते रहते हैं, और वे व्यभिचार करते रहते हैं और इस तरह की हरकतें करते रहते हैं। लेकिन आप एक शादी और विवाह के बारे में सोचते हैं, और मुख्य चीजों में से एक, निश्चित रूप से, हम जो करते हैं वह है प्रतिज्ञाओं का आदान-प्रदान।

मैं वादा करता हूँ कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ दयालु, धैर्यवान और सौम्य रहूँगा। मैं वादा करता हूँ कि मैं धोखा नहीं दूँगा। और इस तरह के बहुत सारे झूठ नहीं बोलूँगा।

मैं वादा करता हूँ कि मैं सारी बुरी बातें नहीं लूँगा, इस तरह की अच्छी बातें, यही रिश्ते की नींव है। लेकिन एक मुख्य बात जो लोग शादी के रिश्ते में प्रवेश करते समय कसम खाते हैं, वह है बाकी सब को त्यागने की पूरी बात। मैं सिर्फ़ तुम्हारे प्रति ही सच्चा रहूँगा।

वैसे, इस तरह की प्रतिज्ञाएँ हमारे लिए ज़रूरी नहीं कि नई और आधुनिक हों। और ये बहुत पुराने, बहुत पुराने ज़माने से चली आ रही हैं। और यहाँ तक कि जब ये कानून दिए गए थे, तब भी

विवाह अनुबंध हुआ करते थे, जिसमें इस तरह के नियम होते थे जिनका पालन उन्हें करना होता था।

और इसलिए यह रूपक इसराइल के साथ जो कुछ हो रहा है उसके लिए बहुत उपयुक्त है। और यह रिश्ते की विशिष्टता के बारे में इस पूरी बात से शुरू होता है। तुम मुझसे शादी करने जा रहे हो।

तुम्हारे पास कोई और नहीं होगा। और वह कहाँ है? हम इसे दस आज्ञाओं में बिलकुल शुरुआत में ही देखते हैं। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से बाहर लाया।

आपके पास कोई अन्य देवता नहीं होना चाहिए। इसलिए, हम यहाँ एक एकपत्नीत्व संबंध के बारे में बात कर रहे हैं। मुझे लगता है कि आप यह तर्क दे सकते हैं कि भगवान की अन्य पत्नियाँ भी हो सकती हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हम वहाँ जाएँगे।

लेकिन फिर भी। बेशक, इसके लिए लोगों की ओर से प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं कह पाएगा कि कोई लालच कर रहा है या नहीं।

कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता कि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी के खच्चर की इच्छा रखता है। और इसलिए इस पर कौन निगरानी रखेगा? आप खुद। आप खुद ही इस पर निगरानी रखेंगे।

आप जिम्मेदारी ले रहे हैं इन आज्ञाओं का पालन करना अपने ऊपर है। वास्तव में ये आज्ञाएँ इसी बारे में हैं। ये परमेश्वर और उसके लोगों के बीच के रिश्ते और उन जिम्मेदारियों के बारे में हैं जो लोग दस आज्ञाओं में बताए गए इन दायित्वों को पूरा करने के लिए खुद पर ले रहे हैं।

अब, मैं दस आज्ञाओं से संबंधित कुछ ऐतिहासिक महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में बात करना चाहूँगा क्योंकि ये कई अलग-अलग संदर्भों में सामने आए हैं। आज भी दस आज्ञाओं के बारे में बहुत चर्चा होती है। बहुत से विद्वान यह नहीं जानते कि इनके बारे में क्या समझा जाए।

मैं बहुत सी टिप्पणियाँ सुनेंगे कि दस आज्ञाएँ, जैसा कि हम निर्गमन 20 में पाते हैं, वे मूल रूप में नहीं हो सकतीं, जैसा कि उन्हें दिया गया था या उनका मूल रूप था, और उन्हें वर्षों के दौरान बहुत कुछ बदला गया होगा, इत्यादि। उन्हें इससे परेशानी क्यों है? खैर, सबसे पहले, एक सवाल यह है कि कैसे ऐतिहासिक आलोचना चमत्कार की संभावना को नकारती है। इसलिए भगवान का पहाड़ की चोटी पर प्रकट होना और इन चीजों को पत्थर की पट्टियों पर लिखना कुछ लोगों को थोड़ा दूर की कौड़ी लगता है।

इसलिए, वे इसे सिर्फ इसलिए अस्वीकार कर देंगे क्योंकि इसमें चमत्कारी तत्व है। और जब आप इसके बारे में सोचते हैं तो यह अजीब लगता है लेकिन मूसा के अस्तित्व के बारे में भी बहुत संदेह है। और जब मैं शिकागो में अपने पीएचडी कार्यक्रम में स्नातक विद्यालय में था तो मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरा एक मित्र था जो कैथोलिक पादरी था, मैंने रोम में पॉपटिफिकल संस्थान का अध्ययन किया था लेकिन वह और मैं एक बार मूसा के बारे में बात कर रहे थे और मुझे याद नहीं है कि हम

इस विषय पर कैसे पहुंचे लेकिन मैंने कुछ उल्लेख किया, यह मेरे लिए बहुत स्पष्ट है कि मूसा अस्तित्व में था और उसने कहा, गंभीरता से? और मैंने कहा, ठीक है, हाँ।

वह कहते हैं, आप इस पर कैसे विश्वास कर सकते हैं? उनका कहना है कि वह स्पष्ट रूप से एक बनावटी चरित्र है। और उन्होंने कई कारण बताए कि उन्हें क्यों लगता है कि मूसा एक बनावटी चरित्र है, और मैं इस तथ्य पर वापस आया कि इनमें से कई बातें जिनका उन्होंने उल्लेख किया, जैसे कि उदाहरण के लिए यह तथ्य कि मूसा का एक मिस्री नाम था, वास्तव में मूसा की ऐतिहासिकता के प्रमाण हैं न कि मूसा की गैर-ऐतिहासिकता के। मुझे वास्तव में नहीं लगता कि हिब्रू लोग, यदि वे अपने सबसे बड़े नायक को बनाना चाहते, तो उसे मिस्री नाम देते।

और इसके अलावा, वे वास्तव में नहीं जानते थे कि नाम का क्या मतलब है क्योंकि बाइबल में हमारे पास जो लोक व्युत्पत्ति है, वह यह है कि उसे नदी से खींचा गया था और यह हिब्रू शब्द मशच से आता है जिसका अर्थ है खींचना लेकिन हम जानते हैं कि मूसा नाम वास्तव में मिस्र का है जिसका अर्थ है जन्मा हुआ या किसी बेटे जैसा कुछ, जैसे रामेसेस नाम में, रा थुटमोसेस से पैदा हुआ, थुट से पैदा हुआ और इसी तरह आगे भी। इसलिए, मूसा का नाम स्पष्ट रूप से मिस्र का है, और मुझे खुद उसकी प्रामाणिकता के सवाल से कोई समस्या नहीं है, लेकिन अगर मूसा नहीं थे, तो जाहिर है, तो दस आज्ञाएँ प्राप्त करने के लिए पहाड़ पर चढ़ने वाला कोई मूसा नहीं था। ऐसे अन्य लोग भी हैं जो मूसा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं, लेकिन वे ऐसा मानते हैं और मुझे याद है कि मैंने एक प्रसिद्ध बाइबल विद्वान से यह पढ़ा था, जिसने कुछ इस प्रकार कहा था कि हाँ, मूसा निश्चित रूप से अस्तित्व में था, वह ऐतिहासिक अभिलेख में इतना बड़ा है कि उसका अस्तित्व अवश्य रहा होगा, लेकिन दूसरी ओर मूसा के पास करने के लिए इतना कुछ था कि यह कल्पना करना कठिन होगा कि मूसा ने कानून प्राप्त करने और कानून संहिता प्राप्त करने और यह सब प्राप्त करने के लिए समय निकाला होगा, इसलिए वास्तव में यह संभवतः सभी कानून बाद के समय से आए और उन्हें केवल मूसा के लिए जिम्मेदार ठहराया गया।

आप इसे कैसे साबित करेंगे? यह सिर्फ किसी की राय है, है न? मुझे लगता है कि जब हम दस आज्ञाओं के मूल स्वरूप के सवाल पर बात करना शुरू करते हैं तो हम थोड़े ज़्यादा ठोस आधार पर होते हैं, लेकिन फिर भी, यहाँ भी, मुझे लगता है कि हम थोड़े अस्थिर हैं। हम यहाँ कुछ विवाद के बारे में बात कर सकते हैं, इसका कारण यह है कि हमारे पास बाइबल में दस आज्ञाओं के कुछ अलग-अलग संस्करण हैं, और कुछ जगहों हैं जहाँ दस आज्ञाओं का उल्लेख किया गया है, जहाँ शब्दों और क्रम और इस तरह की चीज़ों के बारे में कुछ सवाल हैं। अतः निर्गमन 20 और व्यवस्थाविवरण 5 में कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं और मैं उन्हें एक मिनट में इंगित करूंगा, लेकिन तथ्य यह है कि इन दोनों के बीच कुछ अंतर हैं, जिसका तात्पर्य यह है कि शायद व्यवस्थाविवरण के समय या निर्गमन के लेखन के समय और व्यवस्थाविवरण के लेखन के समय के बीच या यदि आप इसे ऐतिहासिक संदर्भ से बाहर ले जाना चाहते हैं, तो कहें कि व्यवस्थाविवरणवादी की परंपरा और निर्गमन को लिखने वाले व्यक्ति की परंपरा के बीच आपकी सोच में विकास हुआ है या यहां तक कि दो अलग-अलग विचारधाराएं हैं, दो अलग-अलग परंपराएं हैं जिन्होंने दस आज्ञाओं के थोड़े अलग रूपों को संरक्षित किया है।

और इसलिए यह सवाल उठता है, अच्छा, मूल आज्ञा कौन सी थी? कई लोग तर्क देते हैं कि मूल आज्ञाएँ छोटी थीं, जैसे संख्या 6 से 9 तक तुम हत्या नहीं करोगे, तुम व्यभिचार नहीं करोगे इत्यादि, और वे सभी मूल रूप से नकारात्मक थीं। इसलिए अपने पिता और माता का सम्मान करो शायद मूल रूप से वे कुछ ऐसा कहते थे कि अपने पिता और माता का अपमान मत करो इसे पवित्र रखने के लिए सब्त के दिन को याद रखने के बजाय मूल रूप से कुछ ऐसा था कि सब्त के दिन को मत तोड़ो या ऐसा कुछ, और फिर उन्होंने बाद में इसका विस्तार किया। यह संभव है।

मुझे ऐसा लगता है कि यह संभव नहीं है, जरूरी नहीं है। मैं व्यक्तिगत रूप से इसे जरूरी भी नहीं मानता। फिर यह भी सवाल है कि क्या वास्तव में दस आज्ञाएँ हैं या नहीं, क्योंकि निर्गमन 20 में दस आज्ञाएँ नहीं कही गई हैं, यह सिर्फ इतना कहता है कि ये आज्ञाएँ हैं, इसमें वास्तव में दस शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है, लेकिन निर्गमन 34 में कहीं और इसका इस्तेमाल किया गया है और व्यवस्थाविवरण में भी दस आज्ञाओं के बारे में बात की गई है। एक और बात जो हम अक्सर देखते हैं, वह यह विचार है कि सभी दस आज्ञाएँ मूल रूप से मृत्युदंड योग्य अपराध थीं।

इसलिए हत्या एक मृत्युदंडनीय अपराध है, व्यभिचार एक मृत्युदंडनीय अपराध है, और इसलिए यह तर्क दिया गया है कि इनमें से कुछ चीजें जोड़ी गईं, जैसे लालच करना। लालच को मृत्युदंडनीय अपराध नहीं माना जा सकता, लेकिन चोरी करना उन चीजों में से एक है जिसके बारे में कई विद्वान बहस करते हैं। चोरी का मूल रूप से केवल अपहरण से ही मतलब था, क्योंकि अपहरण एक मृत्युदंडनीय अपराध था; चोरी करना, अपने पड़ोसी से लूटना, मृत्युदंडनीय अपराध नहीं माना जाता था। फिर से, मुझे नहीं लगता कि उस तर्क का भी कोई आधार है।

इसके दो कारण हैं। सबसे पहले, यह स्पष्ट नहीं है कि ये चीजें मृत्युदंड योग्य अपराध थीं। व्यभिचार, और हम व्यभिचार पर चर्चा करने जा रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि खुद को दोहराने का कोई मतलब नहीं है।

आप इस बारे में सोचें, पुराने नियम में कितने लोग वास्तव में व्यभिचार करने के कारण मारे गए थे? जवाब है शून्य। पुराने नियम में वास्तव में कोई भी नहीं मरा। कई लोगों ने व्यभिचार किया।

वास्तव में, पुराने नियम में बहुत से लोगों ने व्यभिचार किया था, और इसका कई बार उल्लेख किया गया है, लेकिन व्यभिचार करने के लिए किसी को भी कभी मौत की सज़ा नहीं दी गई, भले ही कानून कहता है कि व्यभिचारियों को पत्थर मारकर मार डालना चाहिए। हमारे पास फिर से होशे और उसकी पत्नी गोमेर की प्रसिद्ध कहानी है। क्या हुआ? जाहिर है, होशे अपनी पत्नी को गुलामी में बेचने जा रहा था।

खैर, हम जानते हैं कि उन दिनों यह एक आम सज़ा थी। अगर आप अपनी पत्नी से छुटकारा पाना चाहते थे, क्योंकि उसने व्यभिचार किया था, और यह स्पष्ट था कि उसने ऐसा किया था, और वह दोषी थी, तो आप उसे गुलाम के रूप में बेच सकते थे। यह उन तरीकों में से एक था जिससे इसे निपटा जाता था, और जाहिर तौर पर होशे ने यही करने का फैसला किया था।

हमारे पास राजा दाऊद है, जो उन सभी में सबसे प्रसिद्ध व्यभिचारी है, और यहाँ तक कि एक हत्यारा भी है, और उसके साथ क्या हुआ? खैर, भगवान ने उसके पाप को दूर कर दिया ताकि दाऊद मर न जाए। बेशक, उसके बाद उसके घर में हर तरह की परेशानी थी, और फिर हमारे पास भविष्यवक्ताओं में कई बार ऐसे लोगों का उल्लेख है जिन्होंने व्यभिचार किया है। हमारे पास ऐसे लोगों के संदर्भ हैं जो अपने जीवनसाथी के प्रति बेवफ़ा हैं, और पुरुष इसके बारे में शिकायत करते हैं, लेकिन वे क्या कर रहे हैं? वे इसके बारे में कुछ नहीं कर रहे हैं।

अगर हमारे यहाँ यह सब व्यभिचार चल रहा होता, तो आप सोचते कि हमारे यहाँ भी लोग मर रहे होते, लेकिन ऐसा नहीं है। यह विचार कि ये सभी चीज़ें मृत्युदंड योग्य अपराध थीं, वास्तव में बहुत ज़्यादा सही नहीं है जब आप देखते हैं कि उन्हें वास्तव में कैसे लागू किया गया था। सब्बाथ तोड़ना, मैंने पहले ही इस तथ्य के बारे में बात की है कि सब्बाथ तोड़ना काफी नियमित रूप से होता था। माना जाता है, मेरा मतलब है कि आदर्श रूप से शायद, जाहिर तौर पर यह एक मृत्युदंड योग्य अपराध था, लेकिन इसे वास्तव में उस तरह से लागू नहीं किया गया था।

तो अगर हम यह कहने जा रहे हैं कि, ठीक है, यहाँ स्पष्ट रूप से कुछ संभावित बहिष्करण या अपवाद हैं, तो चोरी जैसी किसी चीज़ के लिए अपवाद क्यों नहीं? लालच जैसी किसी चीज़ के लिए अपवाद क्यों नहीं? मुझे नहीं लगता कि यह धारणा फिर से एक मजबूत तर्क है। तो, हम यहाँ दस आज्ञाओं के कितने संस्करणों के बारे में बात कर रहे हैं? खैर, विद्वान निर्गमन 20 के बीच अंतर करना पसंद करते हैं, जिसे वे नैतिक दस आज्ञाएँ कहते हैं, जो वे आज्ञाएँ हैं जिनसे हम सभी परिचित हैं, और फिर निर्गमन 34, 10-26, जिसे वे अनुष्ठान दस आज्ञाएँ कहते हैं। अब, मैं यहाँ एक बाइबल निकालने जा रहा था, किंग जेम्स संस्करण नहीं, हालाँकि, लेकिन यहाँ हम जाते हैं, नया अंतर्राष्ट्रीय संस्करण, और हम निर्गमन 34 को देखेंगे।

वे जो करते हैं वह यह है कि वे इन्हें दो अलग-अलग स्रोत दस्तावेजों से जोड़ते हैं। आम तौर पर, वे तर्क देते हैं कि निर्गमन 34 एक ऐसा संस्करण है जो शायद पुरोहित परंपरा या व्यवस्थाविवरण परंपरा या उस तरह की किसी चीज़ से आता है, जबकि निर्गमन 20 याह्विस्टिक परंपरा से आता है, लेकिन वे निर्गमन 34 को एक और दस आज्ञाएँ कहते हैं, और इसका कारण यह है कि दस आज्ञाएँ वाक्यांश वास्तव में वहाँ इस्तेमाल किया गया है। हालाँकि, आइए इस अंश को पढ़ें और देखें कि यह वास्तव में यहाँ क्या कह रहा है। इसलिए प्रभु ने मूसा से कहा कि पहले वाले की तरह दो पत्थर की पटियाएँ तराशें, और मैं उन पर वे शब्द लिखूँगा जो तुम्हें पहली पटियाओं पर लिखने थे, जिन्हें तुमने तोड़ दिया हाँ, धन्यवाद, भगवान। मुझे वास्तव में उस अनुस्मारक की आवश्यकता थी। सुबह तैयार रहना, फिर सिनाई पर्वत पर आना, वहाँ पहाड़ की चोटी पर मेरे सामने खुद को प्रस्तुत करना। कोई भी तुम्हारे साथ नहीं आना है या पहाड़ में कहीं भी दिखाई नहीं देना है, यहाँ तक कि वे झुंड भी नहीं जिन्होंने मुझे चरते हुए सुना आदि। मूसा ने दो पत्थर की पटियाएँ और एक चिन्ह तराशा।

मैं ऊपर गया आदि आदि। फिर प्रभु नीचे आया, घोषणा की, और वहाँ खड़ा हुआ और अपना नाम प्रभु घोषित किया, और वह मूसा के सामने से गुज़रा, प्रभु को दयालु, दयालु, भावुक, आदि आदि घोषित करते हुए। आगे बढ़ते हुए, मूसा ने ज़मीन पर सिर झुकाया। आइए यहाँ देखें, मैं आपके सभी लोगों के सामने आपके साथ एक वाचा बना रहा हूँ।

मैं चमत्कार करूँगा, और फिर यहाँ हम इन आज्ञाओं में आते हैं, जिन लोगों के बीच तुम रहते हो वे देखेंगे कि मैं, प्रभु, कितना अद्भुत काम करूँगा। तुम्हारे लिए, जो मैंने आज तुम्हें आज्ञा दी है उसका पालन करो। मैं तुम्हारे सामने एमोरियों को निकाल दूँगा जिन्हें तुम श्रेय देते हो मैं उनसे संधि करने से सावधान रहता हूँ उनकी वेदियों को तोड़ डालो उनके पवित्र पत्थरों को तोड़ डालो उनके अशेरा के खंभों को काट डालो किसी अन्य ईश्वर की पूजा मत करो क्योंकि प्रभु जिसका नाम ईर्ष्यालु है वह एक ईर्ष्यालु ईश्वर है जो अब स्पष्ट रूप से पहली आज्ञा से मेल खाता है। ठीक है, सावधान रहो उन लोगों के साथ संधि मत करो जो देश में रहते हैं, क्योंकि जब वे अपने देवताओं के लिए खुद को वेश्या बनाते हैं और उन्हें बलिदान करते हैं।

वे आपको उनके साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करेंगे, आदि, आदि तो यह पहली आज्ञा के समान ही है, सही? ढली हुई मूर्तियाँ न बनाएँ। खैर, आपके लिए दूसरी आज्ञा है अखमीरी रोटी का पर्व मनाएं सात दिन बिना खमीर की रोटी खाएं जैसा कि मैंने आपको अभी आज्ञा दी है, यह कहीं भी दस आज्ञाओं में नहीं है ठीक है हर गर्भ की पहली संतान मेरी है जिसमें आपके पशुओं के सभी ज्येष्ठ नर शामिल हैं चाहे वे झुंड से हों या झुंड से एक मेमने के साथ ज्येष्ठ गधे को छुड़ाया, आदि यह दस आज्ञाओं में नहीं है। मेरे सामने कोई भी खाली हाथ नहीं आना है। छह दिन तुम सातवें दिन श्रम करोगे।

तुम्हें थोड़ा आराम करना चाहिए। ठीक है, यह सब्त का दिन है, है ना? गेहूँ की फसल के पहले फलों के साथ सप्ताहों का पर्व मनाएं। इसलिए हमारे पास एक ऐसे पर्व का उत्सव है जिसका उल्लेख दस आज्ञाओं में नहीं है। ठीक है, वर्ष में तीन बार तुम्हारे लोग मेरे सामने भगवान परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे। किसी भी खमीर युक्त चीज़ के साथ मेरे लिए बलि का खून चढ़ाने का आदेश न दें। ठीक है, फसल के पर्व के बलिदान को सुबह तक न रहने दें। अपनी भूमि की सर्वोत्तम उपज अपने भगवान यहोवा के घर में ले आओ। एक बच्चे बकरी को उसकी माँ के दूध में न पकाएं। तब भगवान ने मूसा से कहा कि इन आज्ञाओं को लिख लो क्योंकि इन्हीं शब्दों के अनुसार मैंने तुम्हारे साथ एक वाचा बाँधी है और मूसा इस्राएल में भगवान के साथ 40 दिन और 40 रात बिना रोटी खाए या पानी पिए रहा। और उसने उन पटियाओं पर वाचा के शब्द, दस आज्ञाएँ लिखीं। ठीक है, तो विद्वानों का तर्क यह है कि मूल दस आज्ञाओं में पर्वों की यह सूची और बलिदानों से संबंधित ये बातें शामिल थीं, और वास्तव में दस आज्ञाओं के दो अलग-अलग संस्करण थे, निर्गमन 20 संस्करण और फिर निर्गमन 34 संस्करण जिसमें विभिन्न प्रकार के पर्वों और बलिदानों से संबंधित ये सभी बातें शामिल थीं, क्योंकि यह कहा जाता है कि उसने दस आज्ञाओं के लिए वाचा के शब्दों को लिखा था। लेकिन हाँ, मुझे नहीं लगता कि यह मानने का कोई कारण है कि दस आज्ञाएँ उन सभी चीज़ों को संदर्भित करती हैं जो उसने अभी वहाँ कही हैं आप जानते हैं और मैंने उस सूची में सभी विभिन्न आज्ञाओं को कई बार गिना है और ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे मैं इसमें शामिल हो सकूँ मुझे लगता है कि वह कह रहा है हाँ, मैंने लिखा है उसने दस आज्ञाएँ लिखी हैं लेकिन ये सभी अन्य कानून भी हैं जिनका वह उल्लेख कर रहा है वह यह निर्दिष्ट नहीं कर रहा है कि निर्गमन 34 में वे कानून दस आज्ञाएँ हैं इसलिए मुझे नहीं लगता कि व्यक्तिगत रूप से यह दस आज्ञाओं का एक अलग संस्करण है, ठीक है व्यवस्थाविवरण 5 के बारे में क्या ख्याल है क्योंकि वह दूसरा है तो हाँ निर्गमन 34 कानूनों का एक संग्रह है व्यवस्थाविवरण 5 निश्चित रूप से यह एक बेहतर मामला है क्योंकि व्यवस्थाविवरण 5 में हमारे पास एक संस्करण है

जो निर्गमन 20 के समान ही है और मूसा शुरुआत में कहता है आप जानते हैं कि ये वो आज्ञाएँ हैं जो परमेश्वर ने हमें दी हैं, लेकिन कुछ अंतर हैं उदाहरण के लिए आइए यहाँ कुछ चीजों को देखें तो निर्गमन 20 यह एक बड़ी बात है। यह पहली बात है: सप्ता के दिन को पवित्र मानना। छः दिन तुम परिश्रम करना और अपना सारा काम करना; सातवाँ दिन सप्ता का दिन है।

तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए तुम्हारे बेटे के जीवन के भंडार छह दिनों में थे भगवान परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को और जो कुछ उनमें है उसे देखने के लिए बनाया लेकिन सातवें दिन विश्राम किया इसलिए भगवान ने सप्ता के दिन को आशीर्वाद दिया और इसे पवित्र किया हमें निर्गमन 20 के अनुसार सप्ता का दिन क्यों मनाना चाहिए? क्योंकि सृष्टि के सातवें दिन भगवान ने विश्राम किया, ठीक है? व्यवस्थाविवरण 5 के बारे में क्या ख्याल है? सप्ता के दिन का पालन करें और इसे मनाएँ। पवित्र है प्रभु, आपके परमेश्वर ने आपको अपना काम करने के लिए छह दिन की आज्ञा दी है, इत्यादि इत्यादि। क्यों याद रखें कि आप मिस्र देश में एक गुलाम थे और प्रभु आपके परमेश्वर ने आपको एक शक्तिशाली हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से वहाँ से बाहर निकाला इसलिए प्रभु ने आपको सप्ता के दिन को रखने की आज्ञा दी ठीक है इसलिए हमारे पास व्यवस्थाविवरण 5 में एक अलग तर्क है जो हमारे पास निर्गमन 20 में है निर्गमन 20 सृष्टि में सप्ता के दिन की जड़ें व्यवस्थाविवरण 5 में उद्धार के कार्य में है जो निर्गमन में हुआ ठीक है, और फिर हमारे पास यहाँ लालच की बात है।

बस यहाँ एक छोटा सा अंतर है. आप अपने पड़ोसी के घर को नहीं ढकेंगे आप अपने पड़ोसी की पत्नी, पुरुष या महिला दास, बैल गधे, किसी भी चीज को नहीं ढकेंगे जो आपके पड़ोसी की हो। व्यवस्थाविवरण 5 न ही आप अपने पड़ोसी की पत्नी को ढकेंगे, न ही आप अपने पड़ोसी के घर या खेत या पुरुष सेवक या महिला सेवक या बैल या गधे या किसी भी चीज की इच्छा करेंगे जो पड़ोसी की हो। यहाँ एक छोटा सा दिलचस्प अंतर है, मेरी समझ में यह है कि व्यवस्थाविवरण दस आज्ञाओं का एक बाद का और अधिक प्रतिबिंबित संस्करण है, इस्राएलियों को कानून का पालन क्यों करना है, हम कह सकते हैं कि अस्तित्व का कारण ऑन्कोलॉजिकल कारण है क्योंकि भगवान ने इसे सृष्टि के समय स्थापित किया था, जबकि नैतिक कारण यह है कि आप स्वयं जानते हैं कि वास्तव में कड़ी मेहनत करना और संघर्ष करना कैसा होता है और इसलिए क्योंकि आपको इससे गुजरना पड़ा है, आपको उन अन्य लोगों के प्रति देखभाल और विचारशील होना चाहिए जिन्हें संघर्ष करना पड़ता है, इसलिए एक दिन की छुट्टी लें और व्यवस्थाविवरण के तर्क करने का तरीका। आप जानते हैं कि निर्गमन की ओर वापस लौटें, तो वे मूल रूप से वही बात कह रहे हैं, वे इसे बस एक अलग आधार दे रहे हैं, व्यवस्थाविवरण में लालच के साथ यह एक कारण से महत्वपूर्ण होने जा रहा है, जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे, लेकिन हाँ, वे पत्नी को आगे ले जाते हैं और इसे दूसरों से एक निश्चित सीमा तक अलग करते हैं और व्यवस्थाविवरण में वे फ़्रील्ड भी जोड़ते हैं और मेरी सोच यह है कि वे फ़्रील्ड इसलिए जोड़ते हैं ताकि यहाँ लालच वाली चीजों की संख्या सात हो जाए।

हाँ, क्योंकि आप जानते हैं, उन्हें पूर्णता पसंद है, है ना? तो, आपने सात चीजों की एक सूची का उल्लेख किया, और फिर आपने कहा कि आपके पड़ोसी से संबंधित कुछ भी नहीं है। आप जानते हैं कि सात पूर्णता की संख्या है। तो आप कह रहे हैं कि ठीक है, यहाँ सात चीजें हैं, और आप जानते हैं, आपको इनमें से किसी का भी लालच नहीं करना चाहिए, और मूल रूप से इसका

मतलब यह है कि सात चीजों को सूचीबद्ध करके आप कह रहे हैं कि आपके पड़ोसियों की किसी भी चीज की लालसा न करें। हम पत्नी को आगे क्यों लाते हैं? मैं कहता हूँ कि कौन जानता है लेकिन मैं कहता हूँ कि इसका एक कारण यह है कि व्यवस्थाविवरण एक ऐसी परंपरा को प्रतिबिंबित करने की कोशिश कर रहा हो सकता है जो पत्नी की पहचान घरेलू संपत्ति से नहीं करती है। निर्गमन 20 को पढ़ना आसान है और वाचा की लालच की आज्ञा कह रही है कि आपके पड़ोसी की सारी संपत्ति जिसमें उसकी पत्नी भी शामिल है बेशक जब हम उस आज्ञा के बारे में बात करते हैं, लेकिन यह संभव है कि व्यवस्थाविवरण यह स्पष्ट करना चाहता है कि पत्नी को किसी पुरुष की संपत्ति में नहीं माना जाना चाहिए और इसलिए हो सकता है कि वे आगे आ गए हों, यह मेरी ओर से सिर्फ एक अनुमान है, लेकिन मुझे लगता है कि निर्गमन 20 वास्तव में दस आज्ञाओं के मूल रूप का प्रतिनिधित्व करता है और मुझे लगता है कि कोई भी अन्य पुनर्निर्माण सिर्फ अटकलें हैं, इसका कोई बहुत अधिक आधार नहीं है।

मेरा मतलब है, दस आज्ञाओं के बारे में एक और सवाल यह है कि क्या यह 10 है या 11 है? खैर, हर कोई दस आज्ञाओं पर सहमत है क्योंकि बाइबिल दस आज्ञाओं के बारे में कहता है, लेकिन आप उन्हें कैसे गिनते हैं, इसमें एक अंतर है। उदाहरण के लिए, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, जिसने ये सब कहा, जो तुम्हें मिस्र से भूमि की गुलामी से बाहर लाया। मेरे सिवा तुम्हारे कोई अन्य देवता न हों। आइए हम इन्हें यहां जल्दी से सामने लाएं अपने लिए कोई मूर्ति न बनाएं तो हां, उन लोगों के लिए जो उनमें से केवल चार को ही याद रख सकते हैं, वे यहां हैं अपने प्रभु अपने परमेश्वर के नाम का दुरुपयोग न करें मुझे यह आदेश, यह अनुवाद पसंद नहीं है यह वास्तव में आप जानते हैं अपने प्रभु और ईश्वर के नाम पर अपने परमेश्वर यहोवा को व्यर्थ न लें जिस तरह से पुराने किंग जेम्स संस्करण ने किया था वास्तव में यह सबसे अच्छा अनुवाद है सब्त के दिन को पवित्र रखने के लिए याद रखें अपने पिता और माता का आदर करें मैं इसका अनुवाद घर-परिवार के रूप में करूंगा। अनुवाद न करें और अपने पड़ोसी के घर-परिवार की लालसा न करें। हम बात नहीं कर रहे हैं।

मैं एक भौतिक संरचना के बारे में नहीं सोचता, और जब हम बाद में इस पर बात करेंगे तो मैं उस पर भी आऊंगा। दस आज्ञाओं की संरचना, यह कुछ ऐसा है जिसके पीछे फिर से थोड़ा सा प्रश्न और थोड़ी सी बहस है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह क्रम यादृच्छिक है। यहाँ कुछ अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई संरचना है। सबसे पहले हमारे पास एक से तीन तक की आज्ञाएँ हैं जो परमेश्वर के प्रति हमारे दायित्वों के बारे में हैं। यह एक और कारण है कि मुझे लगता है कि निर्गमन 20 अधिक प्रामाणिक संस्करण है, क्योंकि इसमें यह है बहुत स्पष्ट संरचना, बहुत स्पष्ट पैटर्न, जो कि कुछ अन्य संस्करणों में भी प्रतिबिंबित नहीं होता है। आज्ञाएँ एक से तीन तक परमेश्वर के प्रति मानवीय दायित्व तब हम सब्त के दिन न केवल परमेश्वर के प्रति बल्कि सृष्टि के प्रति दायित्व पर आते हैं। क्या आप जानते हैं कि हम सब्त का पालन क्यों करते हैं? अच्छा? ऐसा इसलिए नहीं है कि हम अपने ईश्वर का सम्मान कर रहे हैं, बल्कि इसलिए भी है कि हम अपने समाज को संरक्षित कर रहे हैं, हम अपने साथी मनुष्यों के प्रति या प्रकृति के प्रति अच्छे हो रहे हैं, हमारे खेत वगैरह और आप जानते हैं कि बाइबल में अपनी जमीन को विश्राम देने के बारे में बहुत चर्चा है, अपने साल या साल देने के बारे में, जो भी मामला हो, लेकिन विचार यह है कि उस जमीन को भी आराम की जरूरत है और निश्चित रूप से आपके जानवर, इसलिए यह न केवल ईश्वर के प्रति दायित्व है, बल्कि पूरी सृष्टि के प्रति दायित्व है, फिर हम अगले में जाते हैं और हमारे

पास अपने पिता और माता का सम्मान है और यह अन्य मनुष्यों के प्रति हमारे दायित्वों की शुरुआत है और यह दिलचस्प है कि यह अपने पिता और माता का सम्मान करने से शुरू होता है, जो हमारे लिए एक छोटी सी बात लगती है, बजाय इसके कि बड़ी बात से शुरू करें, जो कि हत्या न करें, लेकिन इसके लिए एक कारण है, जिसे हम उस आज्ञा के बारे में बात करते समय प्राप्त करेंगे और फिर छह से नौ तक अन्य लोगों के प्रति हमारे दायित्व और गंभीरता के अवरोही क्रम हर पाप एक जैसा होता है। नहीं, यह सच नहीं है।

आप जानते हैं, आप किसी से पूछते हैं, क्या आप चाहेंगे कि कोई आपका पर्स चुरा ले या आपकी हत्या कर दे। यह कहना कि ये दोनों समान हैं, हास्यास्पद है। आप जानते हैं कि यहाँ हत्या से लेकर व्यभिचार तक की गंभीरता में स्पष्ट रूप से कमी आई है जिसे बहुत, बहुत बुरा माना जाता था, किसी से चोरी करना, किसी के बारे में झूठी बातें बताना या उनके बारे में ऐसी बातें कहना जो आपको नहीं कहनी चाहिए और फिर अंतिम तक जो हमारे आंतरिक जीवन के बारे में है इसलिए हम अन्य लोगों के प्रति अपने दायित्वों के माध्यम से ईश्वर के प्रति दायित्वों से आगे बढ़ रहे हैं, वास्तव में हमारे विचार जीवन के प्रति दायित्व, सम्मान करने और हमारे विचार जीवन को व्यवस्थित करने के लिए तो चलिए इसे यहाँ घर लाते हैं आइए थोड़ी बात करते हैं कि हम दस आज्ञाओं की व्याख्या कैसे करने जा रहे हैं, इसलिए सबसे पहले हमें उन्हें उनके ऐतिहासिक सांस्कृतिक संदर्भ में पढ़ने की जरूरत है और यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि प्राचीन दुनिया में लोगों के लिए व्यभिचार इतना बुरा क्यों था यह समझ में बहुत अलग था जिसे हम आज व्यभिचार समझते हैं झूठी गवाही न देने के विचार के पीछे सांस्कृतिक सामान का एक पूरा समूह है, आप जानते हैं क्योंकि हम प्राचीन इसराइल नहीं हैं आप जानते हैं कि हमारे पास कोई धर्मतंत्र नहीं है। हम एक राष्ट्र के रूप में ईश्वर के शासन के अधीन नहीं हैं, मुझे पता है कि कुछ लोग इस पर बहस करेंगे।

कुंआ। हमें व्यक्तिगत रूप से नहीं होना चाहिए, मैं यह नहीं खरीदता कि आप जानते हैं, मेरा मानना है कि हमारे पास हमारी नागरिकता है, हम ईश्वर के राज्य में हैं और यही वह है जिस पर ईश्वर शासन करता है, इस दिन और युग में कोई भी राजनीतिक इकाई नहीं, लेकिन फिर भी मूल्य यहाँ व्यक्त किया गया है, ईश्वर द्वारा शासित लोगों के एक धर्मतंत्र के संदर्भ में काम करते हैं, आज्ञाएँ इजराइल की असफलताओं का एक अग्रदूत हैं, आप जानते हैं कि डेविड नोएल फ्रीडमैन ने कई साल पहले एक किताब लिखी थी, जो मुझे नहीं लगता कि वास्तव में किसी को भी आश्चर्य करती है, लेकिन बहुत ही पेचीदा थी क्योंकि उन्होंने तर्क दिया था कि इजराइल का पूरा इतिहास मूल रूप से दस आज्ञाओं की विफलताओं पर आधारित है और इनमें से प्रत्येक मामले में जब हम पुराने नियम की प्रत्येक पुस्तक को देखते हैं तो हम देखते हैं कि एक अलग आज्ञा पर बल दिया गया है और कभी-कभी उनके तर्क बहुत रचनात्मक होते हैं, लेकिन मुद्दा यह है कि मुझे लगता है कि तथ्य यह है कि आप सीधे चेहरे के साथ उस तर्क को बना सकते हैं, यह दर्शाता है कि वास्तव में यह दस आज्ञाएँ साहित्यिक और धार्मिक संदर्भ ठीक है? इससे, हम समझते हैं कि दस आज्ञाएँ हिब्रू बाइबिल केनन का हिस्सा हैं। उन्हें इसी तरह समझा गया था कि उनकी पूर्ति हो चुकी है और सभी को पुराने नियम की अन्य पुस्तकों में स्पष्ट रूप से बताया गया है और अब निश्चित रूप से हमारे लिए ईसाइयों के रूप में हम उन्हें यीशु द्वारा सिखाई गई बातों के प्रकाश में भी पढ़ते हैं और एक छोटी सी चीज़ है जिसे पर्वत पर उपदेश कहा जाता है जहाँ यीशु इनमें से

कई आज्ञाओं के बारे में बताते हैं और उनके बारे में बहुत विस्तार से बात करते हैं और उन सिद्धांतों के बारे में बताते हैं जिन्हें यीशु ने बताया है।

वास्तव में यह समझने के लिए प्रमुख आधार हैं कि दस आज्ञाएँ हमारे दिन और हमारे जीवन में कैसे लागू होती हैं। एक और सवाल जो मैं यहाँ पर उठाने जा रहा हूँ और मैं इस पर उतना ध्यान नहीं दे पाऊँगा जितना इसे देना चाहिए, लेकिन मुझे कम से कम इस पर बात करने की ज़रूरत है कि क्या ईसाईयों को दस आज्ञाओं का पालन करना अनिवार्य है? आप इंटरनेट पर ऑनलाइन जाएँ। आपको बहुत सारी वेबसाइटें मिलेंगी जहाँ लोग तर्क दे रहे हैं कि दस आज्ञाओं को पूरी तरह से निरस्त कर दिया गया है, कि उनका आज के ईसाई जीवन पर कोई असर नहीं है, जिसे आप जानते हैं, और ऐसा लगता है कि वे वास्तव में सब्बाथ आज्ञा पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आप जानते हैं, मुझे लगता है कि आपके यहाँ जो लोग हैं, वे कुछ ऐसे लोग हैं जो पहले हुआ करते थे? सब्बाथेरियन और फिर आंदोलन छोड़ दिया और अब उनके कंधे पर एक चिप है और इसलिए वे कहते हैं कि, हम किसी भी कानून को सही नहीं मानते हैं, इसलिए यदि हम किसी भी कानून को स्पष्ट रूप से नहीं मानते हैं तो हमें सब्ब के दिन को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन क्या हम एक दायित्व के अधीन हैं, मुझे लगता है कि ओह, चलो पहले एक से यहां तक जाते हैं, लगभग कोई भी ईसाई आज यह तर्क नहीं देता है कि लोग जो चाहें कर सकते हैं, लेकिन कई लोग तर्क देते हैं कि हमारे पास पुराने नियम के कानूनों को रखने का कोई दायित्व नहीं है, जो कि कुछ हद तक आप जानते हैं कि बाइबल में कई अंशों द्वारा समर्थित है, आप जानते हैं कि पॉल ने लिखा था व्यवस्था के कामों से कोई भी प्राणी धर्मी नहीं ठहराया जाएगा, इसलिए हम अपने आप को इस बात से सही नहीं ठहरा सकते हैं कि हम कितने कानूनों का पालन करते हैं, हम कानूनों को रखने से बचा नहीं सकते हैं, लेकिन मैं तर्क दूंगा कि न तो इज़राइल था और एक मिनट में इसके बारे में बात करें हम आध्यात्मिक रूप से कानून रखने के लिए बाध्य नहीं हैं, लेकिन न ही प्राचीन इज़राइल था, लेकिन आप जानते हैं कि कानूनों ने कुछ हद तक अपने समाज को आदेश दिया था, मैं? ऐसा मत मानो कि पुराना नियम अप्रचलित है, और मुझे यह यीशु नामक इस व्यक्ति से अच्छे अधिकार पर प्राप्त हुआ है। मुझे नहीं लगता कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को समाप्त करने आया हूँ। मैं उन्हें समाप्त करने नहीं आया हूँ, बल्कि उन्हें पूरा करने आया हूँ। ऐसे लोग हैं जो तर्क देते हैं कि जब यीशु क्रूस पर मरे, तब व्यवस्था पूरी हुई। मुझे ऐसा नहीं लगता। मुझे लगता है कि यीशु जिस बारे में बात कर रहे हैं, वह यह है कि जब उनका राज्य अपनी पूर्णता में आएगा। आमतौर पर यीशु अपने मिशन की पूर्ति के बारे में इसी तरह बात करते हैं। उनका मिशन तब पूरा नहीं हुआ, जब वे मृतकों में से जी उठे। उनका मिशन तब पूरा होगा, जब वे अपनी अंतिम महिमा में वापस आएंगे और उनका राज्य अपनी पूर्णता में आएगा। यही वह समय होगा, जब व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि यह हमारे हृदयों पर लिखी होगी। और हममें से किसी को भी दस आज्ञाओं के अर्थ के बारे में व्याख्यान देने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि जैसा कि यिर्मयाह की पुस्तक हमें बताती है, किसी को भी अपने पड़ोसी से यह कहने की आवश्यकता नहीं होगी कि प्रभु को जानो, क्योंकि वे सब प्रभु को जान लेंगे।

ऐसा अभी नहीं हुआ है, ऐसा तब तक नहीं होगा जब तक परमेश्वर का राज्य अपनी पूर्णता में नहीं आ जाता, इसलिए यीशु का व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण व्यवस्था के उद्देश्य का पालन करना है और यह हम उनके पहाड़ी उपदेश में तम्बू में बहुत स्पष्ट रूप से देखते हैं और जैसे-जैसे मैं दस आज्ञाओं को पढ़ता हूँ, हम इस बात पर बार-बार ज़ोर देते हैं कि हमें व्यवस्था के उद्देश्य का पालन

करना है, न कि व्यवस्था के शब्दों का और पॉल कहते हैं कि शब्द मारता है, लेकिन आत्मा जीवित करती है और हम कह सकते हैं कि पवित्र आत्मा की बात करें, लेकिन पवित्र आत्मा ही व्यवस्थाओं की आत्मा है और इसलिए व्यवस्थाओं की भावना का पालन करके हम उसे पूरा कर सकते हैं, हम उन तरीकों से चल सकते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं अब मुझे लगता है कि मुझे इसे यहीं समाप्त करना चाहिए। मेरे पास वास्तव में कई और स्लाइड हैं जिन्हें मैं पॉल और अन्य पर नए दृष्टिकोण के बारे में ला सकता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि मैं उन्हें छोड़ दूँगा क्योंकि मुझे लगता है कि इसे समाप्त करने के लिए यह एक अच्छी जगह है।

यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या एक है, दस आज्ञाएँ और कानून

ठीक है, तो प्रभु ने मूसा से कहा कि पहले वाले की तरह दो पत्थर की पटियाँ तराशें, धन्यवाद भगवान, मुझे वास्तव में उस अनुस्मारक की आवश्यकता थी, सुबह तैयार रहें, फिर सिनाई पर्वत पर आएँ, वहाँ पर्वत की चोटी पर अपने आप को मेरे सामने प्रस्तुत करें, आपके साथ कोई भी न आए या पर्वत पर कहीं भी दिखाई न दे, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ भी नहीं, झुंड चरने न दें, आदि मूसा ने दो पत्थर की पटियाँ तराशीं और सिनाई ऊपर चला गया, आदि, आदि तब प्रभु नीचे आए और अपना नाम घोषित किया, प्रभु सिनाई के नीचे आए और सीधे आगे बढ़े, मूसा ने भूमि पर झुककर प्रणाम किया, आइए यहाँ देखें, मैं आपके सभी लोगों के सामने आपके साथ एक वाचा बाँध रहा हूँ, मैं आश्चर्यकर्म करूँगा और फिर यहाँ हम इन आज्ञाओं में आते हैं, जिनके बीच आप रहते हैं वे देखेंगे कि मैं प्रभु आपके लिए कितना अद्भुत कार्य करूँगा, जो लोग देश में रहते हैं, जब वे अपने देवताओं के लिए वेश्यावृत्ति करते हैं और उन्हें बलि चढ़ाते हैं तो वे आपको उनके साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित करेंगे, आदि, आदि, इसलिए यह पहली आज्ञा के समान ही है, ढली हुई मूर्तियाँ न बनाएं, अखमीरी रोटी न खाएं, 7 दिन तक बिना खमीर की रोटी खाएं, जैसा कि मैंने आपको आज्ञा दी है, जो कि 10 आज्ञाओं में कहीं भी नहीं है, प्रत्येक गर्भ की पहली संतान मेरी है, जिसमें आपके पशुओं के सभी ज्येष्ठ नर शामिल हैं, चाहे वे झुंड से हों या झुंड से, ज्येष्ठ गधे को मेमने आदि के साथ छुड़ाएं, जो कि 10 आज्ञाओं में नहीं है, कोई भी मेरे सामने खाली हाथ नहीं आना चाहिए, 6 दिन तक आपको श्रम करना होगा, गेहूं की फसल के पहले फलों के साथ सप्ताहों का पर्व मनाना, इसलिए हमारे पास एक ऐसा पर्व है जिसका फिर से 10 आज्ञाओं में उल्लेख नहीं इन शब्दों के अनुसार मैंने तुम्हारे साथ एक वाचा बाँधी है और इस्राएल में मूसा 40 दिन और 40 रात प्रभु के साथ बिना रोटी खाए या पानी पिए रहा और उसने तख्तियों पर वाचा के शब्द 10 आज्ञाएँ लिखीं, इसलिए यह दावतों और बलिदानों के बारे में इन बातों का तर्क है और इसी तरह 10 आज्ञाओं के वास्तव में 2 अलग-अलग संस्करण थे, निर्गमन 20 संस्करण था और फिर निर्गमन 34 संस्करण था जिसमें इन विभिन्न प्रकार के दावतों और बलिदानों के बारे में ये सभी बातें शामिल थीं और इसी तरह क्योंकि यह कहता है कि उसने वाचा के शब्दों 10 आज्ञाओं को लिखा था लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसा कोई कारण है कि 10 आज्ञाएँ उन सभी चीजों को संदर्भित करती हैं जो उसने अभी वहाँ कही हैं और मैंने उन्हें कई बार गिना है उस सूची में सभी अलग-अलग आज्ञाएँ और ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे मैं इसमें से 10 प्राप्त कर सकूँ निर्गमन 34 में दस आज्ञाएँ हैं, जो दूसरी है, अतः हाँ, निर्गमन 34 कानूनों का संग्रह है, व्यवस्थाविवरण 5 निश्चित रूप से यह एक बेहतर मामला है, क्योंकि व्यवस्थाविवरण 5 में हमारे पास एक ऐसा संस्करण है जो निर्गमन 20 के समान ही है और मूसा ने शुरुआत में कहा कि ये वे आज्ञाएँ हैं जो परमेश्वर ने हमें दी हैं, लेकिन उदाहरण के लिए कुछ अंतर हैं, आइए यहाँ कुछ चीजों पर नज़र डालें, निर्गमन 20 यहाँ एक बड़ी आज्ञा है, यहाँ पहली आज्ञा है, सब्त के दिन को याद रखें और इसे पवित्र रखें, छह दिन तक आप श्रम करेंगे और अपना सारा काम करेंगे, सातवाँ दिन सब्त का दिन है, आपको और आपके पुत्रों और पशुओं को कोई काम नहीं करना चाहिए, क्योंकि छह दिनों में प्रभु परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और उनमें जो कुछ है सब को बनाया, लेकिन सातवें दिन विश्राम किया, सब्त के दिन का पालन करें और इसे याद रखें कि आप मिस्र की भूमि में एक गुलाम थे और प्रभु आपके परमेश्वर ने आपको वहाँ से एक शक्तिशाली हाथ और एक बढ़ाई हुई भुजा के साथ बाहर निकाला इसलिए प्रभु ने आपको सब्त के दिन को रखने की आज्ञा दी इसलिए हमारे पास व्यवस्थाविवरण 5 में एक अलग तर्क है सृष्टि के कार्य में व्यवस्थाविवरण 5 उद्धार के कार्य में जो निर्गमन में हुआ और फिर हमारे पास लालच की बात है

यहाँ बस एक छोटा सा अंतर है आपको अपने पड़ोसी के घर का लालच नहीं करना चाहिए आपको अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच नहीं करना चाहिए पुरुष या महिला दास बैल गधा जो कुछ भी आपके पड़ोसी का है व्यवस्थाविवरण 5 न तो आपको अपने पड़ोसी की पत्नी का लालच करना चाहिए न ही आपको अपने पड़ोसी के घर या खेत या पुरुष नौकर की इच्छा करनी चाहिए और न ही आपको अपने पड़ोसी का लालच करना चाहिए यहाँ दिलचस्प छोटा सा अंतर है मेरी समझ में और इसलिए क्योंकि आपको इससे गुजरना पड़ा है, आपको उन अन्य लोगों के प्रति ध्यान रखना चाहिए और विचारशील होना चाहिए जिन्हें संघर्ष करना पड़ता है, इसलिए एक दिन की छुट्टी लें, खुद को आराम दें, अपने दासों को आराम दें और यह व्यवस्थाविवरण और व्यवस्थाविवरण के तर्क करने के तरीके की बहुत ही खासियत है, जो निर्गमन की ओर लौटता है, इसलिए वे मूल रूप से एक ही बात कह रहे हैं, वे बस इसे एक अलग आधार दे रहे हैं, लालच के साथ व्यवस्थाविवरण, यह उन कारणों से महत्वपूर्ण होने जा रहा है, जिन पर हम बाद में चर्चा करेंगे, लेकिन हाँ, वे पत्नी को आगे ले जाते हैं और उसे व्यवस्थाविवरण में एक निश्चित सीमा तक दूसरों से अलग करते हैं, वे क्षेत्र भी जोड़ते हैं और मेरी सोच यह है कि वे क्षेत्र इसलिए जोड़ते हैं, ताकि यहाँ लालच की जाने वाली चीज़ों की संख्या सात हो जाए, क्योंकि उन्हें पूर्णता पसंद है, इसलिए आप सात चीज़ों की सूची का उल्लेख करते हैं और फिर आप कहते हैं कि न तो आपके पड़ोसी की कोई चीज़ सात है, पूर्णता की संख्या सात है, इसलिए आप कह रहे हैं सामने? मैं कहता हूँ कि कौन जानता है, लेकिन इसका एक कारण यह है कि व्यवस्थाविवरण शायद एक ऐसी परंपरा को प्रतिबिंबित करने की कोशिश कर रहा है जो पत्नी की पहचान घरेलू संपत्ति के साथ नहीं करती है, अब लालच की आज्ञा में निर्गमन अध्याय 20 को पढ़ना आसान है, जैसे कि अपने पड़ोसी की सारी संपत्ति जिसमें उसकी पत्नी भी शामिल है, यह एक तरीका है जिससे आप इसे पढ़ सकते हैं, मुझे नहीं लगता कि आपको इसे उस तरह से पढ़ना होगा और जब हम उस आज्ञा के बारे में बात करेंगे तो मैं निश्चित रूप से उस पर आऊंगा, लेकिन यह संभव है कि व्यवस्थाविवरण यह स्पष्ट करना चाहता हो कि पत्नी को किसी पुरुष की संपत्ति में नहीं माना जाना चाहिए और इसलिए हो सकता है कि निर्गमन 20 दस आज्ञाओं के मूल रूप का प्रतिनिधित्व करता हो और मुझे लगता है कि कोई भी अन्य पुनर्निर्माण सिर्फ अटकलें हैं, इसका उसके लिए बहुत अधिक आधार नहीं है, दस आज्ञाओं के बारे में एक और सवाल यह है कि क्या यह 10 है या 11 है? खैर हर कोई सहमत है कि ये दस आज्ञाएँ हैं क्योंकि बाइबल कहती है कि ये दस आज्ञाएँ हैं लेकिन आप उन्हें कैसे गिनते हैं इसमें एक अंतर है उदाहरण के लिए मैं तुम्हारा भगवान यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र से भूमि की गुलामी से बाहर लाया मेरे सामने तुम्हारे कोई अन्य देवता नहीं होंगे आइए बस इन्हें यहाँ पर लाते हैं अपने लिए कोई मूर्ति न बनाएं इसलिए हाँ उन लोगों के लिए जो उनमें से केवल चार को याद कर सकते हैं वे यहाँ हैं अपने भगवान अपने भगवान के नाम का दुरुपयोग न करें मुझे यह अनुवाद पसंद नहीं है अपने भगवान अपने भगवान का नाम व्यर्थ में न लें जिस तरह से पुराने किंग जेम्स संस्करण ने किया था वास्तव में यह सबसे अच्छा अनुवाद है सब्त के दिन को पवित्र रखने के लिए याद रखें अपने पिता और माता का सम्मान करें हत्या न करें आप व्यभिचार नहीं करेंगे आप चोरी नहीं करेंगे झूठी गवाही न दें अपने पड़ोसी के घर का लालच न करें मैं इसका अनुवाद घर के बजाय थोड़ा अलग तरीके से करूँगा मैं इसका अनुवाद घर के रूप में करूँगा अनुवाद न करें अपने पड़ोसी के घर का लालच न करें दस आज्ञाएँ यह कुछ ऐसा है जिसके पीछे फिर से थोड़ा सा प्रश्न और थोड़ी सी बहस है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह क्रम यादृच्छिक है, यहाँ एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई संरचना है, सबसे पहले हमारे पास आज्ञाएँ 1 से 3 हैं जो कि परमेश्वर के प्रति हमारे दायित्वों के बारे में हैं, वैसे मुझे क्यों लगता है कि

निर्गमन 20 अधिक प्रामाणिक संस्करण है, क्योंकि इसकी संरचना बहुत स्पष्ट है, बहुत स्पष्ट पैटर्न है जो कि कुछ अन्य संस्करणों में भी प्रतिबिंबित नहीं होता है, साथ ही आज्ञाएँ 1 से 3 परमेश्वर के प्रति मानवीय दायित्व हैं, फिर हम न केवल परमेश्वर के प्रति बल्कि सब के दिन सृष्टि के प्रति भी दायित्व पर आते हैं, हम सब का पालन क्यों करते हैं क्योंकि हम अपने समाज का संरक्षण कर रहे हैं, हम अपने साथी मनुष्यों के प्रति अच्छे हैं, हम प्रकृति के प्रति अच्छे हैं, हमारे खेत और इसी तरह बाइबल में आपकी भूमि को सब के दिन या वर्ष देने के बारे में बहुत सी बातें हैं, जैसा भी मामला हो, लेकिन विचार यह है कि भूमि को भी आराम की आवश्यकता है और निश्चित रूप से आपके जानवरों को भी, इसलिए यह न केवल परमेश्वर के प्रति दायित्व है, बल्कि सृष्टि के प्रति दायित्व है, फिर हम अगले में जाते हैं और हमें अपने पिता और माता का सम्मान करना है और यह हमारी शुरुआत है अन्य मनुष्यों के प्रति दायित्व और यह दिलचस्प है कि यह अपने पिता और माता का सम्मान करने से शुरू होता है जो हमारे लिए एक छोटी सी बात लगती है बजाय इसके कि बड़ी बात से शुरू करें जो कि हत्या न करें लेकिन इसके लिए एक कारण है जो हमें तब मिलेगा जब हम गंभीरता की आज्ञा के बारे में बात करेंगे और मेरे पास धर्मशास्त्रियों के साथ कुछ बहसें हुई हैं जो तर्क देते हैं कि नहीं नहीं आपको उन सभी को एक समान गिनना होगा हर पाप एक समान है नहीं यह सच नहीं है आप किसी से पूछते हैं कि क्या आप चाहते हैं कि कोई आपका पर्स चुरा ले या आपको मार डाले यह कहना कि वे समान हैं हास्यास्पद है नहीं यहां गंभीरता के क्रम में स्पष्ट रूप से कमी आई है बुरा होने से लेकर किसी से चोरी करने तक उनके बारे में झूठी बातें कहने या उनके बारे में ऐसी बातें कहने तक जो आपको नहीं कहनी चाहिए और फिर अंतिम तक जो हमारे आंतरिक जीवन के बारे में है इसलिए हम ईश्वर के प्रति दायित्वों से दूसरे लोगों के प्रति अपने दायित्वों की ओर बढ़ रहे हैं वास्तव में हमारे विचार जीवन के प्रति दायित्व और हमारे विचार जीवन को व्यवस्थित करने के लिए तो आइए इस बारे में थोड़ी बात करें कि हम 10 आज्ञाओं की वास्तविक व्याख्या कैसे करने जा रहे हैं इसलिए सबसे पहले हमें उन्हें उनके ऐतिहासिक सांस्कृतिक संदर्भ में पढ़ने की आवश्यकता है और यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि क्यों प्राचीन दुनिया में लोगों के लिए व्यभिचार इतना बुरा था कि यह आज हम व्यभिचार को जो समझते हैं उससे बहुत अलग समझ थी इसलिए इन चीजों को उनके संदर्भ में देखें आज्ञाएं प्राचीन इसराइल के लिए बनाई गई थीं न कि आधुनिक अमेरिका के लिए उन्हें हमारे न्यायालयों में रखना सबसे अच्छा और बुद्धिमाना भरा मामला नहीं हो सकता है क्योंकि हम प्राचीन इसराइल नहीं हैं हमारे पास कोई धर्मतंत्र नहीं है हम एक राष्ट्र के रूप में ईश्वर के शासन के अधीन नहीं हैं मुझे पता है कि कुछ लोग तर्क देंगे कि हमें होना चाहिए व्यक्तिगत रूप से मैं इसे नहीं मानता मेरा मानना है कि हमारी नागरिकता ईश्वर के राज्य में है और ईश्वर इस दिन और युग में किसी भी राजनीतिक इकाई पर शासन नहीं करते हैं लेकिन वैसे भी यहां व्यक्त मूल्य ईश्वर द्वारा शासित लोगों के धर्मतंत्र के संदर्भ में काम करते हैं आज्ञाएं इसराइल की विफलताओं का अग्रदूत हैं डेविड नोएल फ्राइडमैन ने कई साल पहले कहा था मुझे नहीं लगता कि इससे कोई भी वास्तव में सहमत होगा लेकिन यह बहुत ही दिलचस्प था क्योंकि बिंदु यह है कि उसका सीधा चेहरा दिखाता है कि वास्तव में दस आज्ञाएँ एक प्रार्थना सूची हैं जो इस्राएल की असफलताओं की भविष्यवाणी करती हैं, विशेष रूप से उस पहली आज्ञा के साथ जो अन्य देवताओं की पूजा करने के बारे में बड़ी आज्ञा है। उन्हें साहित्यिक और धार्मिक संदर्भ में भी पढ़ें, इससे हमें पता चलता है कि दस आज्ञाएँ हिब्रू का हिस्सा हैं जिनकी पूर्ति होनी है और सभी को पुराने नियम की अन्य पुस्तकों में स्पष्ट रूप से बताया गया है और अब निश्चित रूप से हमारे लिए ईसाईयों के रूप में हम उन्हें यीशु द्वारा सिखाई गई बातों के प्रकाश में भी पढ़ते हैं और एक छोटी सी चीज है जिसे

पर्वत पर उपदेश कहा जाता है जहाँ यीशु इनमें से कई आज्ञाओं से गुजरता है और उनके बारे में बहुत विस्तार से बात करता है, इस तरह से कि हमें यह समझना है कि दस आज्ञाएँ हमारे दिन और हमारे जीवन में कैसे लागू होती हैं। अब एक और प्रश्न जिस पर मैं यहाँ आने वाला हूँ और मैं इसे उतना ध्यान नहीं दे पाऊँगा जितना देना चाहिए, लेकिन मुझे कम से कम इस पर बात करने की आवश्यकता है सब्त के दिन की आज्ञा पर ध्यान केन्द्रित करें। मुझे लगता है कि यहाँ कुछ लोग हैं जो सब्त के अनुयायी हुआ करते थे और फिर उन्होंने आंदोलन छोड़ दिया और अब उनके पास एक चिप है और वे कानून का पालन करते हैं, इसलिए यदि हम किसी भी कानून का पालन नहीं करते हैं तो जाहिर है कि हमें सब्त का दिन नहीं देना है, लेकिन क्या हम किसी बाध्यता के अधीन हैं? मुझे लगता है कि चलो पहले वाले पर चलते हैं। आज लगभग कोई भी ईसाई यह तर्क नहीं देता है कि लोग जो चाहें कर सकते हैं, लेकिन कई लोग यह तर्क देते हैं कि पुराने नियम के कानूनों का पालन करने का हमारा कोई दायित्व नहीं है, जो बाइबल के कई अंशों द्वारा समर्थित हैं। पॉल ने लिखा है कि व्यवस्था के कामों से कोई भी प्राणी धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए हम अपने आप को इस बात से धर्मी नहीं ठहरा सकते हैं कि हम कितने कानूनों का पालन करते हैं। हम कानूनों का पालन करके नहीं बच जाते हैं, लेकिन मैं यह तर्क दूँगा कि न तो इस्राएल था, हम आध्यात्मिक रूप से कानून का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं, लेकिन न ही प्राचीन इस्राएल था जो कुछ हद तक प्राचीन समाज का हिस्सा था। मुझे विश्वास नहीं है कि पुराना नियम अप्रचलित है और मेरे पास यह यीशु नामक इस व्यक्ति से अच्छे अधिकार पर है और मुझे नहीं लगता कि मैं कानून या भविष्यद्वक्ताओं को समाप्त करने आया हूँ, मैं उन्हें समाप्त करने नहीं आया हूँ, बल्कि उन्हें पूरा करने आया हूँ कुछ लोग तर्क देते हैं कि जब वह मृतकों में से जी उठे तो उनका मिशन पूरा नहीं हुआ था, उनका मिशन तब पूरा होगा जब वह अपनी अंतिम महिमा में लौटेंगे और उनका राज्य अपनी पूर्णता में आएगा और तब कानून की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि यह हमारे हृदयों पर लिखा होगा और हममें से किसी को भी कानून का हिस्सा नहीं बनना होगा क्योंकि अब यह तब तक नहीं होगा जब तक कि परमेश्वर का राज्य अपनी पूर्णता में नहीं आता है, इसलिए यीशु का कानून के प्रति दृष्टिकोण कानूनों के उद्देश्य का पालन करना है और यह हम उनके पर्वत पर दिए गए उपदेश में बहुत स्पष्ट रूप से देखते हैं और जब मैं दस आज्ञाओं को पढ़ता हूँ तो हम कानूनों के शब्दों के बजाय कानूनों के उद्देश्य का पालन कर रहे होते हैं और पॉल कहते हैं कि शब्द मारता है लेकिन आत्मा जीवित करती है और हम यह कह सकते हैं कि पवित्र आत्मा की बात करें तो पवित्र आत्मा कानूनों की आत्मा है और इसलिए कानूनों की भावना को बनाए रखकर हम उन तरीकों से चल सकते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, मुझे लगता है कि मैं इसे यहीं समाप्त करने जा रहा हूँ, मेरे पास वास्तव में कई और स्लाइड हैं जिन्हें मैं पॉल और अन्य पर नए दृष्टिकोण के बारे में ला सकता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि मैं इसे छोड़ दूँगा क्योंकि मुझे लगता है कि यह एक इसे समाप्त करने के लिए यह एक अच्छी जगह है। यह डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो और दस आज्ञाओं पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या एक है, दस आज्ञाएँ और कानून।